



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY  
भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1  
प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 204]  
No. 204]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अगस्त 22, 2003/श्रावण 31, 1925  
NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 22, 2003/SRAVANA 31, 1925

### वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

### अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 अगस्त, 2003

### अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य मूल के अथवा वहां से निर्यातित विटामिन-ई के आयातों के सम्बन्ध में  
पाटनरोधी जांच।

सं. 14/32/2002-डीजीएडी.— वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ  
अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर  
पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियम, 1995 को  
ध्यान में रखते हुए:

### क. प्रक्रिया

#### 2. नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी को (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को घरेलू  
उद्योग की ओर से मै० मर्क लि�०, मुंबई से एक लिखित याचिका प्राप्त हुई है  
जिसमें चीन जनवादी गणराज्य (जिसे इसके बाद संबद्ध देश/क्षेत्र कहा गया  
है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित विटामिन-ई के पाटन का आरोप  
लगाया गया है;

- (ii) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले याचिकाकर्ता द्वारा पूर्ण रूप से प्रलेखित याचिका आयेदन के प्राप्त होने के बारे में सम्बद्ध देश के दूतावासों को सूचित किया;
- (iii) प्राधिकारी ने सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची 1 के अध्याय शीर्ष 293628 तथा 230990 के अंतर्गत आने वाले विटामिन-ई के आयातों के संबंध में पाटनरोधी कार्रवाई शुरू करते हुए दिनांक 27 अगस्त, 2002 की सार्वजनिक सूचना भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित की। प्राधिकारी ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना, घरेलू उद्योग द्वारा दायर की गई अगोपनीय याचिका तथा प्रश्नावली की एक प्रति भारत में सम्बद्ध देश के निर्यातकों, आयातकों तथा संबद्ध देश के दूतावास को भेजी और उनसे अनुरोध किया गया कि वे अपने-अपने देशों के उत्पादकों तथा निर्यातकों से निर्धारित समय-सीमा के भीतर निर्धारित प्रपत्र में जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में उत्तर दें।
- (iv) निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी गई थी उनमें से केवल मैं 0 ड्रैजिंग नूह कंपनी लिंग, चीन ने प्राधिकारी को उसका उत्तर दिया। नई दिल्ली स्थित चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को भी जांच की शुरूआत के बारे में सूचना दी गई थी और उनसे अपने-अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह देने के लिए अनुरोध किया गया था। मैं 0 ड्रैजियांग मैडीसिन कं 0 लिंग, ड्रैजियांग, चीन जनवादी गणराज्य ने याचिका का उत्तर दिया।
- (v) प्राधिकारी ने 2 दिसंबर, 2002 को एक सार्वजनिक सूचना (प्रारंभिक जांच परिणाम) जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण, में प्रकाशित किया गया जिसमें आगे जांच होने तक अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की गई थी।
- (vi) प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पक्षों को प्रारंभिक जांच परिणामों की एक प्रति भेजी जिनसे प्रारंभिक परिणामों पर अपने विचारों, यदि कोई हो, पत्र की तारीख से चालीस दिन के भीतर प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।

- (vii) मैं 0 सीएलएफएमए, मुंबई को छोड़कर आयातक प्रश्नावली का किसी भी उपभोक्ताओं/आयातक ने उत्तर नहीं दिया है।
- (viii) प्राधिकारी ने नई दिल्ली स्थित चीन के दूतावास को प्रारंभिक जांच परिणामों की एक प्रति इस अनुरोध के साथ भेजी कि वह अपने देशों के निर्यातकों तथा उत्पादकों को प्रारंभिक जांच परिणामों पर अपने विचार प्रस्तुत करने की सलाह दें।
- (ix) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षों को मौखिक रूप में अपने विचार को 17 अप्रैल, 2003 को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। इसके अतिरिक्त मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने वाली सभी पार्टियों को मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में दर्ज करने का अनुरोध किया गया। पार्टियों से प्रतिपक्षी पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां लेने और उनका खंडन यदि कोई हो, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।
- (x) प्रारंभिक जांच परिणामों की घोषणा करने से पहले सभी हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए मुद्दों जिन्हें प्रारंभिक जांच परिणामों में अधिसूचित किया गया था, संक्षिप्तता के कारण इसमें दोहराया नहीं गया है। तथापि, हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया गया है।
- (xi) उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन परिणामों के लिए विचारित तथ्यों/आधार को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के समक्ष व्यक्त किया गया और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर इन अंतिम जांच परिणामों में विचार किया गया है।
- (xii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल सभी हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु उपलब्ध करवाई थी।
- (xiii) प्राधिकारी ने सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर लागत जांच की और भारत में माल की इष्टतम उत्पादन लागत तथा माल को बनाने और बेचने की लागत का हिसाब लगाया गया।

(xiv) इस जांच में 1 जनवरी, 2001 से 31 मार्च, 2002 (15 माह) की अधिक शामिल है।

### ख. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

#### ३. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधः

विचाराधीन उत्पाद विटामिन-ई है, जिसे एसिटेट रूप में उत्पादित किया जाता है और तत्पश्चात इसे विटामिन-ई एसिटेट के नाम से जाना जाता है। इसे या तो इसी रूप में प्रयोग किया जाता है या फिर विभिन्न किसी जिनमें शुद्ध या आई पी ग्रेड (96% और अधिक) तथा पशु ग्रेड (फीड ग्रेड या ड्राई पाउडर) विटामिन-ई (50%) शामिल है, को प्राप्त करने के लिए आगे प्रसंस्कृत किया जाता है। एसिटेट ग्रेड में, आईपी ग्रेड (96% और अधिक) को भेषजीय प्रयोजनार्थ प्रयोग किया जाता है तथा विटामिन-ई (93%) ग्रेड को फीड ग्रेड बनाने में प्रयोग किया जाता है। इसे सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 में सीमाशुल्क उपशीर्ष रांग 2936.28 के तहत वर्गीकृत किया गया है। याचिकार्कर्ता ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित विटामिन-ई एसिटेट तथा फीड ग्रेड दोनों ही रूपों में संबद्ध देश से आयातित विटामिन-ई की समान वस्तु है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

ये परिणाम नदेशने के लिए विभिन्न हितवद्ध पक्षों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच की गई है तथा उन पर जहाँ भी उचित समझा गया, विचार किया गया है। प्राधिकारी ने नियोतक का यह अनुरोध स्वीकार किया है कि विटामिन-ई (50%) फीड ग्रेड तथा विटामिन-ई एसिटेट ग्रेड (96% एवं 93%) की बिक्री कीमतों में विभिन्न स्तरों की शुद्धता उत्पादन करने वाले लागत तत्वों के कारण प्राथमिक रूप से गहरायर्ण अंतर होता है। प्राधिकारी ने नियोतक के भिन्न-भिन्न शुद्धता के आधार पर उचित तुलना करने संबंधी अनुरोध को स्वीकार किया है। अतः प्राधिकारी इस बात की प्राप्ति करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद

विटामिन-ई है (दोनों एसीटेट (96% तथा 93%) तथा फीड ग्रेड (जो 50% सूखा पाउडर ग्रेड के नाम से जाना जाता है) (इन्हें इसके बाद संबद्ध वस्तु कहा जाएगा) ।

5. विटामिन ई-ई एसीटेट (96% एवं 93%) की सभी किस्मों को अध्याय 293628 में वर्गीकृत किया जाता है तथा विटामिन-ई(50% ड्राई पाउडर). फीड ग्रेड को एनिमल फीडिंग में प्रयोग होने वाले संपाक के एक प्रकार के रूप में 230990 के रूप में वर्गीकृत किया जाता है । यह जांच विचाराधीन उत्पाद के संबंध में उस वर्गीकरण जिसके अंतर्गत इसका आयात हुआ है पर विचार न करते हुए है । सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है ।
6. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में यह विनिर्दिष्ट किया गया है कि ' समान वस्तु ' का तात्पर्य ऐसी किसी वस्तु से है जो सभी प्रकार से जांचाधीन उत्पाद के समान अथवा सदृश हो अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु से है, जिसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तु की विशेषताओं से अत्यधिक मेल खाती हों ;
7. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु हैं । इस जांच में किसी हितबद्ध पक्ष द्वारा विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु की परिमाणों के बारे में कोई विवाद नहीं किया गया है । प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विटामिन ई (एसीटेट और फीड ग्रेड अथवा सूखा पाउडर) की विशेषताओं के समान हैं । उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी का यह मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विटामिन-ई(एसीटेट और फीड ग्रेड) और संबद्ध देशों से आयात किया जा रहा विटामिन ई क्षति निर्धारण के पाटनरोधी नियमों के अर्थ के भीतर मसान

वस्तुएं हैं। इस बारे में प्राधिकारी अनंतिम परिणामों की पुष्टि करते हैं।

### न्यूनतम सीमा

8. प्राधिकारी ने जांच अवधिक के लिए डी जी सी आई एंड एस तथा आई बी आई एस (गौण स्रोत) द्वारा उपलब्ध कराए गए संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात संबंधी आंकड़ों की जांच की है। इन स्रोतों से एकत्र किए गए आंकड़े यह दर्शाते हैं कि जांच की अवधि के दौरान चीन जनवादी गणराज्य से सम्बद्ध वस्तुओं के आयात न्यूनतम निर्धारित स्तर से अधिक हैं।

### घरेलू उद्योग

9. यह याचिका मैसर्स मर्क लिओ, मुंबई द्वारा प्रस्तुत की गई है। याचिकाकर्ता भारत में संबद्ध वस्तु का एकमात्र उत्पादक है। यह तर्क दिए गए हैं कि मर्क लिओ भी चीन से उन मध्यवर्ती वस्तुओं का आयात करती है जो अत्यधिक सस्ते हैं। सी एल एफ एम एन ने यह भी सूचित किया है कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि क्या ई-मर्क, जर्मनी ने यूरोप में विटामिन-ई के बारे में इसी प्रकार की पाटनरोधी याचिका दायर की है। यह भी उल्लेख किया जाता है कि उपर्युक्त सूचना के आलोक में, ई-मर्क (आई) लिओ, मुंबई की विटामिन-ई के बारे में पाटनरोधी शुल्क संबंधी याचिका आपको अच्छी तरह से प्रस्तुत नहीं की है।
10. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर विचार किया है। प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि घरेलू उद्योग और संबद्ध देश के संबद्ध माल का कोई निर्यातक पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर से संबंधित अथवा संबद्ध नहीं हैं। साथ ही, याचिकाकर्ता ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध माल का आयात नहीं किया है और इसलिए उसे घरेलू उद्योग की परिभाषा से अलग रखा जाता

है। प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार एक घरेलू उद्योग है और याचिकाकर्ता उपर्युक्त नियमावली के नियम 5(3) के अनुसार, घरेलू उद्योग की ओर से याचिका प्रस्तुत करने के आधार के मापदण्ड को पूरा करता है। अतः प्राधिकारी घरेलू उद्योग की स्थिति के बारे में अपने अनंतिम जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

मैसर्स झेजियांग मेडिसीन कंपनी (जेएमसी), चीन जनवादी गणराज्य द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दे

11. निर्यातक ने यह अभ्यावेदन किया है कि प्राधिकारी द्वारा की गयी जांच में प्रक्रिया संबंधी गंभीर दोष हैं जो सीमा शुल्क अधिनियम और भारतीय पाटनरोधी विनियमों अथवा यथासंशोधित आईएडीआर और डब्ल्यू टी ओ के अंतर्गत इसके दायित्वों का उल्लंघन है। उन्होंने यह भी अभ्यावेदन किया है कि उन्होंने प्राधिकारी को निर्धारित समय-सीमा के भीतर मानक प्रश्नावली के रूप में यथानिवेदित पूर्ण सूचना प्रस्तुत की थी। उन्होंने यह अनुरोध किया है कि प्राधिकारी ने उनको अस्पष्ट किसी आंकड़ों के बारे में स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए न कोई जांच अथवा प्रक्रिया अपनाई और न ही किसी पत्राचार द्वारा सूचित किया। वह यह भी निवेदन करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा की गयी जांच त्रुटिपूर्ण प्रक्रिया पर आधारित है जिसकी वजह से कार्यवाहियों में अपने हितों की रक्षा करने के लिए जे एम सी को कोई उचित अधिकार अथवा अवसर प्रदान किए विना अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है। वह यह भी निवेदन करते हैं कि प्राधिकारी ने चीन को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने के जे एम सी के अनुरोध को सीधे अर्थीकार कर दिया है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि प्राधिकारी द्वारा आज तक की क्रिया-विधियाँ और कोई विस्तृत दिशा-निर्देश/अनुदेश नहीं दिए गए हैं जो कि डब्ल्यू टी ओ के दायित्वों का उल्लंघन बनता है। उन्होंने यह अभ्यावेदन किया

है कि याचिकाकर्ता का कथित पाटित वस्तु के समान कथित उत्पाद का प्रमुख हिस्सा कैप्टिव खपत के लिए नियत है जो वाणिज्यिक रूप से किसी खुले बाजार में किसी प्रतिस्पर्धा से अलग हो जाता है। यह भी उल्लेख किया गया है कि याचिकाकर्ता ने कथित पाटित वस्तु के समान कथित उत्पाद का उत्पादन करने की दृष्टि से कुछ कच्ची सामग्री का आयात किया था। इसकी उत्पादन प्रक्रिया भी जैड एम सी द्वारा प्रयुक्त प्रक्रिया से भिन्न है।

12. यह निवेदन है कि याचिकाकर्ता ने अधिक आयात सीमा शुल्क का अनुमान किया होगा। इसके अलावा, उपर्युक्त उल्लिखित दो (कोई अन्य किस्म भी) आयातित कच्ची सामग्रियों - आईसोफाइटोल और ट्रिमियोड्रोक्वीनोन में विनिर्माण लागत का क्रमशः लगभग 60% और 20% खर्च आता है। अतः इसका गंभीरतापूर्वक खंडन किया जाता है और यह आपत्तिजनक है यदि याचिकाकर्ता वास्तव में कथित हानिकारक पाटन से प्रभावित या जैसाकि यह स्पष्ट है कि वह अपने उस उत्पादन ढांचे के कारण किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता है जिसके कारण उसका अधिक लापगत आयी है।
13. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह कहना गलत है कि ट्रिमेथाइलफेनोल और आइसोफाइटोल दो प्रमुख कच्ची सामग्रियां हैं। इस किस्म का वक्तव्य अपने-आप में पर्याप्त नहीं है क्योंकि यह उस उत्पादन प्रक्रिया की अवस्था पर निर्भर करता है जिससे कथित पाटित वस्तु के समान कथित उत्पाद का विनिर्माण किया जा रहा है। यह दावे के साथ कहा जाता है कि उत्पादन प्रक्रिया में अनेक अतिरिक्त कच्ची सामग्री का उपयोग किया जाता है। तकनीकी दृष्टिकोण से, प्रारंभिक विन्दु ही 3-फ्रेसोल एवं आइसोवालेरालडिहाइड हैं। यदि याचिकाकर्ता दावा करता है और जैसाकि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा कहा गया है कि ट्रिमेथाइलफेनोल और आइसोफाइटोल प्रमुख सामग्रियां हैं तो, इसका तात्पर्य यह है कि याचिकाकर्ता

की उत्पादन प्रक्रिया वास्तव में 'संयोजन प्रक्रिया' से प्रारंभ हुई थी जो स्वयं यह स्पष्ट करता है कि याचिकाकर्ता ने आइसोवालरलडिहाइड और आइसोफाइटोल की अवस्था से पूर्व कच्ची सामग्री की खरीद/आयात पर गणना की है। इस संदर्भ में यदि याचिकाकर्ता हानिकारक पाठन से पीड़ित होने का दावा करता है तो यह निवेदन है कि कच्ची सामग्रियों की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित उत्पादन प्रक्रिया और अधिक आयात सीमा शुल्कों से याचिकाकर्ता को कठिनाई हुई है जिसके निराकरण निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास उपलब्ध नहीं है।

### 13क. प्रकटीकरण विवरण के बाद जेडएमसी, चीन गणराज्य द्वारा किए गए प्रस्तुतीकरण

- (i) जैसाकि डीजीएडीर को जानकारी है, जेड एम सी सभी आवश्यक सूचना, दस्तावेजों और स्पष्टीकरणों की आपूर्ति करते हुए, भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी द्वारा की जा रही किसी जांच में बाधा न डालते हुए, जांच की प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक प्रक्रियात्मक अनिवार्यता का पालन करते हुए भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी के साथ पूरी क्षमता से सहयोग करता रहा है। तथापि, प्रकटीकरण विवरण की, विशेष रूप से पैराग्राफ 2.4, 2.5 और 2.6 की जांच करते समय, जेड एम सी को भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी द्वारा कथित 'असहयोग' के विवरण को पढ़कर विस्मय हुआ है औश्र निकाले गए निष्कर्ष से निराशा हुई है। जेड एम सी के उचित सुनवाई के अधिकार की प्रक्रियात्मक रूप से सुरक्षा नहीं की गई थी।
- (ii) बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार संबंधी लिखित नियमों को सर्वसम्मति से भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी द्वारा अधिनियमित किया गया था, तथापि, वे नियम सामान्य रूप से 'मानदंडों' का कार्य करते हैं जिनके साथ क्रियाविधिक नियमों का कोई स्पष्ट ढांचा नहीं है जैसे कि 'मानदंडों' को पूरा करने के लिए किसी कंपनी द्वारा भारतीय प्राधिकारी को किस सीमा तक,

किस आधार पर सहायक दस्तावेज प्रस्तुत किए जाएंगे, यह स्पष्ट नहीं है। अनंतिम जांच परिणामों पर अपनी अभ्युक्तियों में भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी को जेडएमसी से ठीक यही कहा था।

- (iii) वर्तमान प्रक्रिया में जेडएमसी निवेदन करता है कि भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी प्रक्रियात्मक अनिवार्यताओं के पालन में, विशेष रूप से जेड एम सी को 'मानदंडों' को पूरा करने के लिए किस प्रकार उचित रूप से दिशा-निर्देश दिए जाएं और उपयुक्त रूप से निर्देश दिए जाएं, असफल रहे हैं। परिणामस्वरूप, जेड एम सी के पास कोई वैध कानूनी प्रत्याशा और कोई कानूनी निश्चितता नहीं है।
- (iv) जेड एम सी ने नोट किया है कि प्रकटीकरण विवरण ने निर्दिष्ट किया था कि जेड एम सी ने 'अनुबद्ध समय अवधि के भीतर उत्तर नहीं दिया है। इसके अतिरिक्त, यदि भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी ने बाजार अर्थव्यवस्था स्थिति के संबंध में अतिरिक्त प्रश्न भेजे तो भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी द्वारा किए गए दावे के बावजूद न तो परामर्शदाता ने और न ही जेड एम सी ने ऐसे प्रश्न प्राप्त किए। बदकिस्मती से अपने तीन नामित परामर्शदाताओं सहित जेड एम सी भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी द्वारा दावा किए गए ऐसे प्रश्नों को प्राप्त नहीं किया। मौके पर जांच पर करार के बारे में सूचना में एक और गंभीर कमी के बारे में परामर्शदाता ने याद दिलाया कि भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी ने मौखिक रूप से जांच के लिए अनुरोध किया था और जेड एम सी ने मौके पर जांच के लिए इच्छापूर्वक सहमति देते हुए मौखिक रूप से उत्तर दिया था। इस संबंध में, दोनों पक्षों की मौखिक वार्ता के अतिरिक्त कोई लिखित अनुरोध और पुष्टिकरण उसके बाद नहीं हुआ।

#### एसोसिएशन ऑफ लाइब-स्टॉक इन्डस्ट्री (सीएलएफएमए ऑफ इंडिया) के अनुरोध

14. याचिकाकर्ता अर्थात् ई-मर्क ने सुनवाई के दौरान यह उल्लेख किया था कि उन्होंने विटामिन ई 50 पाउडर का उत्पादन

स्थगित कर रखा है। इससे इस महत्वपूर्ण तत्व की भारी कमी पड़ सकती है। इससे गुणवत्ता वाले उत्पादों की उपलब्धता करने की दृष्टि से उद्योग द्वारा घटिया उत्पाद का प्रयोग किया जा सकता है। हम इस बात की ठोस सिफारिश करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क न लगाया जाए क्योंकि याचिकाकर्ता का बाजार हिस्सा केवल 22-25% है। उन्होंने यह भी निवेदन किया है कि मैसर्स ई-मर्क भारत में विटामिन ई का विनिर्माण कर रहा है और कम्पनी का अपना मुख्यालय जर्मनी में है। यह कम्पनी विटामिन-ई का विनिर्माण 30 वर्ष पुराने संयंत्र में कर रहा है जो शुरू में तत्कालीन यूएसएसआर को निर्यात कर रहा था। विटामिन-ई डीपीसीओ के अंतर्गत आता है जबकि इसकी बिक्री कई वर्षों तक डीपीसीओ से कम कीमत पर की गयी थी। विटामिन-ई का विनिर्माण करने के लिए मध्यवर्ती वस्तुओं की जरूरत पड़ती है जिनका आयात यूरोप से किया जा रहा है। इसी प्रकार के मध्यवर्ती वस्तुओं का निर्माण भी चीन जनवादी गणराज्य द्वारा किया जाता है। यह ज्ञात हुआ है कि ई-मर्क, ई-मर्क भी चीन से मध्यवर्ती वस्तुओं का आयात कर रहा है।

### घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

15. समग्र उत्पादन में कैप्टिव खपत का प्रतिशत 35% (2000) से बढ़कर 45% (2002) हो गया था। यह बात नोट की जाती है कि यह प्रतिशत देश में उत्पाद के पाटन के कारण बढ़ा जिससे घरेलू उद्योग की बिक्रियों में गिरावट आयी (और इस प्रकार कैप्टिव खपत का प्रतिशत अधिक रहा) इससे घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति प्रमाणित होती है।
16. खपत की गयी कच्ची सामग्रियों में आयातित कच्ची सामग्रियों का हिस्सा 90% से अधिक है। कृपया यह बात नोट करें कि इन कच्ची सामग्रियों के बहुस्रोत हैं। हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से

यह निवेदन करते हैं कि वह चीनी निर्यातकों को कृपया यह निर्देश दें कि वह (क) इन कच्ची सामग्रियों (आइसोफाइटोल और ट्रिमिथाइल फेनोल) के उत्पादन में किए गए संयुक्त निर्देश का खुलासा करें, (ख) क्या निर्यातक इन दोनों सामग्रियों (आइसोफाइटोल और ट्रिमिथाइल फेनोल का कैप्टिव रूप से) उत्पादन कर रहा है; (ग) क्या निर्यातक कैप्टिव उत्पादन के अतिरिक्त इन कच्ची सामग्रियों की बिक्री कर रहा है और यदि हाँ तो, क्या निर्यातक ने अपने उत्पादन लागत में इन कच्ची सामग्रियों की उत्पादन लागत अथवा बिक्री कीमत पर विचार किया है।

17. याचिकाकर्ता द्वारा अपनायी गयी प्रक्रिया गोपनीय है। उक्सा खुलासा नहीं किया जा सकता है। तथापि, यह निश्चित है कि याचिकाकर्ता अपनी उत्पादन प्रक्रिया आइसोफाइटोल एवं ट्रिमेथोल फेनोल से आरंभ करता है। याचिकाकर्ता ने संबद्ध माल का कुछ निर्यात किया है जो 0% से लेकर 5% से कम बनता है। घरेलू उद्योग सभग्र उत्पादन, एसीटोन एवं फीड ग्रेड की बिक्रियों, निर्यात बिक्रियों, कैप्टिव खपत और कुल बिक्रियों में इसके अनुपात एवं कुल उपयोग में घरेलू बिक्रियों के हिस्से संबंधी आंकड़े भी प्रस्तुत किए हैं।
18. घरेलू उद्योग ने यह अभ्यावेदन किया है कि विटामिन-ई का प्रथम उत्पादन अधिक सान्द्रता में किया जाता है और बिक्री कम सान्द्रता में (फीड ग्रेड भी कहा जाता है) की जाती है। संबद्ध माल की सान्द्रता में ग्राहक की जरूरत के अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है। घरेलू उद्योग ने यह उल्लेख किया है कि यदि 50% सान्द्रता वाला विटामिन ई उपलब्ध न हो तो 40% अथवा 45% सान्द्रता वाले विटामिन का उपयोग करना काफी व्यावहारिक होता है। अतः शुल्क को 50% फीड ग्रेड तक सीमित किया जाना चाहिए, इससे शुल्कों से राहजरूप से बचा जाएगा। उन्होंने उन विभिन्न मामलों में प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित अंतिम जांच परिणामों का संदर्भ दिया है जिनमें यदि आयातित सामग्री की सान्द्रता उस सामग्री

की सांद्रता से कम यतायी जाती है जिसके लिए शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की गयी है तो, वहां अनुपात में शुल्क का निर्धारण किए जाने की सिफारिश की गयी है। उन्होंने प्राधिकारी से निवेदन किया है कि वह विटामिन-ई के सभी रूपों में शुल्कों की पुष्टि करें और जिन आयातित उत्पादों के मामलों में सांद्रता ऊससे भिन्न बतायी गयी है जिसके लिए पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण किया गया है वहां अनुपात के आधार पर पाटनरोधी शुल्क लागू होगा।

### प्रकटीकरण विवरण के पश्चात् घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

18क. प्रदत्त सूचना की अस्वीकृति के बारे में एकमात्र प्रतिवादी निर्यातक द्वारा किए गए तर्क अस्वीकार किए जाने योग्य हैं क्योंकि निर्यातक यह प्रमाणित करने में असमर्थ रहा है कि वह बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्राप्त करने का हकदार है। इस संबंध में निर्यातक द्वारा दिए गए विभिन्न तर्क भी अस्वीकार किए जाने योग्य हैं। इस बारे में याचिकाकर्ता ने विस्तृत निवेदन किए थे और उन पर विश्वास किया जाता है।

(ii) याचिकाकर्ता ने (गोपनीय और अगोपनीय आधार) पर पर्याप्त सूचना प्रदान की है जिससे यह स्पष्ट होता है कि घरेलू उद्योग के संबद्ध देश से संबद्ध माल के पाटन के कारण वास्तविक क्षति हुई है। हम इस पर विश्वास करते हैं। याचिकाकर्ता ने पहले सूचना प्रदान की थी जिसमें कम्पनी कल लाभप्रदता पर पूर्ववर्ती वर्षों में कच्ची सामग्रियों की उच्च लागत का प्रभाव दर्शाया गया था। इससे यह देखा जा सकेगा कि यदि कच्ची सामग्रियां उस कीमत पर प्राप्त होती जिस कीमत पर अब प्राप्त हो रही हैं तो, कम्पनी को विगत में काफी लाभ होता। पूर्ववर्ती वर्षों में घरेलू उद्योग को हुई क्षति कच्ची सामग्रियों की अधिक कीमत और पाटित आयातों के कारण हुई थी। यद्यपि घरेलू उद्योग ने अपनी क्षति की पूर्ति करने के लिए पहले कच्ची सामग्रियों की लागतों में कमी करके ठोस कदम उठाया था

और इस कदम से लाभप्रदता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथापि बार में पाटन के कारण एक बार पुनः स्थिति सर्वाधिक खराव हो गयी जो स्वतः जांच अवधि के भीतर काफी महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, यदि कंपनी जांच अवधि में कच्ची सामग्रियों की प्राप्ति पूर्ववर्ती कीमतों पर करना जारी रखती तो, घरेलू उद्योग को और अधिक नुकसान होता। साथ ही, यदि पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति में वृद्धि नहीं होती तो, घरेलू उद्योग की कार्यनिष्ठादन काफी संतोषजनक होता।

- (iii) याचिकाकर्ता के लिए उत्पाद की कैप्टिव खपत का ब्यौरा पहले दिया जा चुका है। यह प्रदर्शित किया गया था कि याचिकाकर्ता के उत्पादन एवं बिक्रियों में कैप्टिव खपत का हिस्सा काफी अधिक है। अतः घरेलू बाजार पर पड़ने वाला कोई प्रतिकूल प्रभाव का कैप्टिव खपत पर भी काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यह निवेदन है कि यह बात संगत नहीं है क्योंकि कम्पनी ने उत्पाद की डी पी सी ओ कीमत के आधार पर कैप्टिव रूप से प्राप्त निविष्टि को लागत का अंतरण कर दिया है।
- (iv) यह तर्क है कि कम्पनी के पास पर्याप्त कैप्टिव खपत है और अतः घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति नहीं हो सकती थी, इस संबंध में यह निवेदन है कि यद्यपि यह बात सत्य है तथापि यह देखा जा सकता है कि कम्पनी की पर्याप्त मर्चेट बिक्रियां भी हैं।
- (v) यह तर्क कि याचिकाकर्ता मुख्य कच्ची सामग्रियों का आयात कर रहा है, इस संबंध में यह निवेदन है कि यह मुद्दा असंगत है। वर्तमान प्रयोजनाथ कच्ची सामग्रियों और परिष्कृत माल में भेद किया जाता है। वस्तुतः निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा ऐसे अनेक मामले पूरे किए गए हैं जिनमें प्रमुख कच्ची सामग्री का आयात किया गया था। उदाहरणार्थ, एक्रिलिक फाइबर (एक्रिलोनाइट्राइल), एन बी आर (एक्रिलोनाइट्राइल एवं बुटाइन), मैटकोक (वस्तुतः घरेलू उद्योग द्वारा 'उत्पादन करने

की क्षमता के लिए जो स्पष्टभकरण दिया गया था वह यह था कि वह कोयल का आयात करके माल का उत्पादन कर सकता है ) कुछेक ऐसे उदाहरण हैं जिनमें घरेलू उद्योग ने कच्ची सामग्री का आयात किया है । याचिकाकर्ता श्री निम्नलिखित मामलों में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित अंतिम जांच परिणामों का संदर्भ देना और उन पर विश्वास करना चाहता है जिनमें यह पाया गया है कि शुल्क आयातित विशेष सांद्रता तक सीमित नहीं रहा है । शुल्क या तो विचाराधीन उत्पाद पर लगाया गया है अथवा उस मामले में आनुपातिक शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की गयी है जिसमें आयातित सामग्री की सांद्रता उस उत्पाद की सांद्रता से भिन्न बताया गया है जिसके लिए शुल्क का निर्धारण किया गया था ।

1. कोलाइन क्लोरोइड (आनुपातिक शुल्क);
  2. जिंक ओक्साइड (आनुपातिक शुल्क);
- (vi) उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, याचिकाकर्ता यह अनुरोध करता है कि प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि इस संशोधन के साथ की जाए कि पाटनरोधी शुल्क विटामिन-ई के सभी रूपों में है और यदि आयातित उत्पाद की सांद्रता उस उत्पाद की सांद्रता से भिन्न बतायी जाती है, जिसके लिए पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण किया गया है तो, पाटनरोधी शुल्क समानुपात के आधार पर लगाया जाएगा ।

### मैसर्स सोहम आर्गेनिक्स लिं, नासिक द्वारा किया गया अनुरोध

19. उन्होंने अभ्यावेदन किया है कि वह संबद्ध माल का विनिर्माण करने वाली प्रथम भारतीय कंपनी है और जहां तक उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का संबंध है वे सर्वाधिक इच्छुक पक्षकार हैं । उन्होंने यह भी अभ्यावेदन किया है कि यद्यपि जांच अवधि के दौरान वह विनिर्माता नहीं थे तथापि वह पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के पश्चात् भी होने वाली

वास्तविक एवं लागत संबंधी क्षति के बारे में सर्वाधिक चिंतित हैं। उन्होंने अभ्यावेदन किया है कि विटामिन-ई के भारतीय उपभोक्ताओं की संख्या भारतीय विनिर्माताओं की कुल विनिर्माण क्षमता से अधिक नहीं है। उन्होंने प्राधिकारी से चीन जनवादी गणराज्य और अन्य देशों पर लगाए जाने वाले पाटनरोधी शुल्क की दरों की समीक्षा करने का अनुरोध किया है ताकि इससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके, स्वदेश में उत्पादित विटामिन-ई की मांग बदली जा सके और बाजार में व्यापक विकल्प उपलब्ध बनाए रखने में मदद मिल सके।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

- 20(i) निर्यातक द्वारा यह तर्क दिया गया है कि निर्यातक द्वारा पूर्ण सूचना प्रस्तुत की गई थी और फिर भी उसे अस्वीकार कर दिया गया है और निर्यातक को गैर-बाजारी अर्थव्यवस्था के रूप में माना जा रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रश्नावली को स्वीकार करने का प्रश्न केवल तभी उठता है जब निर्यातक निर्यातक की प्रश्नावली में पूछे गए प्रपत्र और तरीके से उसका जवाब दे और नियमों के अनुबंध 1 के पैरा 8 के तहत निर्धारित मानदण्ड को भी पूरा करे। उक्त पैरा और उसमें निर्धारित शर्तें स्वतः व्याख्यात्मक हैं। इसलिए यह तर्क देना उपयुक्त नहीं होगा कि एम ई टी (बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार) प्रदान करने के लिए परिस्थितियों का उल्लेख नहीं किया गया था।
- (ii) यह गलत है कि एम ई टी (बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार) प्रदान करने के संबंध में कोई प्रक्रिया अथवा विस्तृत दिशा-निर्देश/अनुदेश निर्धारित नहीं किए गए हैं। नियमों के तहत बाध्यता पर मानदंड विनिर्दिष्ट करने की है। जिसे निर्यातक एम ई टी प्रौष्ठ करने के उद्देश्य से पूरा करे। नियमों के तहत निर्धारित विशिष्ट मानदण्ड के अतिरिक्त प्राधिकारी यह स्मरण करते हैं कि सार्वजनिक सुनवाई के बाद बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार के संबंध में पाटनरोधी नियमों के नियम 8(3) के तहत

निर्धारित अनुमानों के खंडन के संबंध में निर्यातक से सूचना मांगी गई थी। प्राधिकारी ने दिनांक 6 जून, 2003 के पत्र को फाइल संख्या 14/32/2002 को स्पीड पोस्ट द्वारा दिल्ली में निर्यातक के कानूनी सलाहकार को भेजा और निर्यातक से पत्र का जवाब 15 दिनों के भीतर देने को कहा गया था। इसके अलावा, उक्त पत्र की प्राप्ति की पुनः पुष्टि मौखिक रूप से कानूनी सलाहकार से की गई थी। इसके अलावा प्राधिकारी ने विशेष रूप से निर्यातक से प्रारंभिक जांच परिणामों में इंगित की गई त्रुटियों के संबंध में उत्तर प्रस्तुत करने को कहा था और सत्यापन दौरे के लिए अपनी इच्छा की पुष्टि करने को भी कहा गया था। यह भी उल्लेख किया गया है कि पत्राचार दिल्ली में उनके कानूनी सलाहकार के जरिए किया गया था क्योंकि कंपनी ने उन्हें प्राधिकारी से सारे पत्र-व्यवहार प्राप्त करने, उनकी ओर से अनुरोध करने और उनकी ओर से प्रस्तुत होने के लिए नियुक्त किया था। यह भी पुष्टि की गई थी कि दिल्ली में उनके कानूनी सलाहकार ने निर्यातक की ओर से प्राधिकारी के साथ पूर्ववर्ती पत्राचार किया था और वे प्राधिकारी के समक्ष सार्वजनिक सुनवाई में भी उपस्थित हुए थे। निर्यातक को लिखे गए उक्त पत्र की एक प्रति सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध है और प्रेषण बौरों सहित कानूनी सलाहकार के साथ किए गए पत्र-व्यवहार की प्रति भी सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध है। इसलिए प्राधिकारी को 6 जून, 2003 का पत्र प्राप्त न होने के संबंध में निर्यातक द्वारा किए गए अनुरोध को अस्वीकार करने को बाध्य होना पड़ा है।

- (iii) जेड एम सी का यह कथन कि याचिकाकर्ता के उत्पादन के एक बड़े भाग का प्रयोग केप्टिव खपत हेतु किया जाता है, गलत है। यह देखा गया है कि याचिकाकर्ता की केप्टिव खपत और याचिकाकर्ता की सौदा बिक्री याचिकाकर्ता के लिए दो प्रमुख बाजार हैं और याचिकाकर्ता उस स्थिति में सौदा बाजार में हुई क्षति के निवारण की मांग करने के लिए पूर्णतः हकदार है जब ऐसा सौदा बाजार कुल उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा हो और याचिकाकर्ता नियमानुसार आधार की अपेक्षा को

पूरा करता हो। केप्टिव बिक्री एवं सौदा बिक्री के बारे में प्रस्तुत सूचना से यह प्रतीत नहीं होता कि कंपनी सौदा बिक्री के स्थान पर कैप्टिव खपत का सहारा ले रही है।

- (iv) जहां तक आरम्भिक कच्ची सामग्री तथा उच्च सीमा शुल्क के प्रभाव तथा निहितार्थों के बीच अंतर का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उद्योग की जांच केवल विद्यमान परिस्थितियों में ही की जानी अपेक्षित है।
- (v) सी एल एफ एम ए ने तर्क दिया है कि याचिकाकर्ता ने हाल ही में विटामिन ई 50 पाउडर का उत्पादन स्थगित कर दिया है और इससे इस प्रमुख सामग्री की कमी हो सकती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इससे संभवतः क्षति के बारे में घरेलू उद्योग के दावे की पुष्टि होती है।

### सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

21. सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 9क(1)(ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ यह होगा कि:

- (i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथा निर्धारित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो: या
- (ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-

- (क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु की उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक सूचक मूल्य : या
- (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक, विक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागतः

बशर्ते कि ऐसे मामले में जहां वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल यानान्तरित किया गया हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक कीमत नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके कीमत के संदर्भ में किया जाएगा ।

### निर्यातक मै0 जेड एम सी, चीन जनवादी गणराज्य द्वारा किए गए अनुरोध

22. निर्यातक ने अनुरोध किया है कि प्रारंभिक जांच परिणामों में जेड एम सी द्वारा प्रस्तुत की गई सारी सूचना को बिल्कुल अस्वीकार कर दिया गया है और प्राधिकारी ने जेड एम सी के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया है । उन्होंने अनुरोध किया है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण में प्राधिकारी द्वारा प्रयोग की गई उपलब्ध तर्कों में उक्त नियम का अनुचित प्रयोग है । उन्होंने प्राधिकारी से इस गलती को सुधारने का निवेदन किया है । उन्होंने यह भी अनुरोध किया है कि प्राधिकारी आई ए डी आर का आदर करने में असफल रहे हैं क्योंकि आई आर डी आर के अनुबंध 1 के खण्ड 7 में उस आदेश

का प्रावधान है जिसमें सामान्य मूल्य के निर्धारण के विकल्प दिए गए हैं। उन्होंने यह अनुरोध किया है कि पहले आने वाले को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और यदि यह लागू न हो तब दूसरे विकल्प पर विचार किया जाना चाहिए। प्राधिकारी ने चीन में अनुमानित उत्पादन लागत जमा एस जी ए व्यय के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करते समय और आई ए डी आर के प्रावधानों की अनदेखी करते समय संभवतः सबसे आसान रास्ता अपनाया है। उन्होंने पाटन मार्जिन की गणना, आवश्यक आंकड़ों के साथ सौदेवार ब्यौरों को पूर्ण रूप से प्रकट करने और उन्हें जेड एम सी को उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है।

### घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

23. घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि क्योंकि जांच अनुबंध 1 के पैरा 7 और 8 के अनुसरण में आरम्भ की गई है इसलिए निर्यातक का उत्तर केवल तभी स्वीकार किया जा सकता है यदि कंपनी यह प्रमाणित करे कि वह पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-1 के 8(3) के तहत निर्धारित बाजार अर्थव्यवस्था मानदण्डों के तहत प्रचालन कर रही थी।

यह साक्ष्य है कि किसी कंपनी के जवाब को केवल तभी स्वीकार किया जा सकता है जब यह सिद्ध करने के लिए सूचना और साक्ष्य उपलब्ध कराती है कि इसने निम्नलिखित 15 मानदण्डों पर बाजार अर्थव्यवस्था सिद्धांतों के तंहत प्रचालन किया है :-

- क. क्या निम्नलिखित बाजार संकेतों के अनुसार है और राज्य के महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के बिना है :-

1. बिक्री लागत
2. लागतें

3. निविष्टियां - कच्ची सामग्री
4. प्रौद्योगिकी
5. श्रम
6. निर्गत - उत्पादन
7. बिक्री - मात्रा
8. निवेश

ख. क्या निम्नलिखित ऐसी कंपनियों पर लागू होते हैं:-

9. परिसम्पत्तियों का मूल्यहास
10. बट्टे खाते डालना
11. विनिमय व्यापार
12. ऋणों की क्षतिपूर्ति के जरिए भुगतान
13. दिवालियापन कानून
14. सम्पत्ति कानून

ग. क्या निम्नलिखित कंपनी के बारे में वास्तव में ऐसे हैं:-

बाजार दर पर विनिमय परिवर्तन - खरीद और बिक्री दोनों के लिए।

मौजूदा मामले में कंपनी को इस कारण के लिए प्रारम्भ में ही इस कारण से मंजूदी नहीं दी जा सकती क्योंकि कंपनी में अधिकांश शेयरधारक राज्य से ही हैं। हम यहाँ कंपनी द्वारा दिए गए उत्तर में से संगत उद्धरण संलग्न कर रहे हैं। यह देखा जाएगा कि अनेक शेयरधारक राज्य की हस्ती वाले हैं। ऐसा मामला होने के कारण कंपनी यह स्थापित नहीं कर सकती कि यह राज्य के हस्तक्षेप के बगैर कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत की गई सूचना में ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है कि उत्पादन के कारक बाजार मूल्यों को परिलक्षित करते हैं।

याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि नियम 8 संबंधित निर्यातक पर दायित्व और भार डालता है तथापि मौजूदा मामले में निर्यातक स्वयं को बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनी स्थापित करने में

असमर्थ रहा है। ऐसा मामला होने के कारण निर्यातक के बारे में सामान्य मूल्य का निर्धारण नियम 7 के अनुसार किया जाता है। याचिकाकर्ता ने भारत में वास्तव में भुगतान की गई कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य पर विचार किया है जिसे लाभ मार्जिन के लिए यथावत् समायोजित किया है। प्राधिकारी ने मूलता के देश में उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर सामान्य मूल्य पर विचार किया है जिसमें प्रारंभिक जांच परिणामों में उचित रूप से समायोजन करने के पश्चात् प्रशासनिक बिक्री और सामान्य व्यय तथा लाभ की उचित राशि शामिल है।

उपर्युक्त के मद्देनजर, याचिकाकर्ता इस संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी से प्रारम्भिक जांच परिणामों की पुष्टि करने का अनुरोध करते हैं।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

24. प्राधिकारी ने नियम 9 क(1)(ग) के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी थी। चीन जनवादी गणराज्य के केवल एक निर्यातक अर्थात् मैसर्स झेजियांग मेडिसीन कं0 (जेएमसी) लि0, चीन जनवादी गणराज्य ने प्राधिकारी को निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित सभी परिशिष्टों के उत्तर के साथ उत्तर दिया है। प्राधिकारी स्मरण करते हैं कि उन्होंने जांच परिणामों को पृष्ठ 36 पर एक टिप्पणी दी है कि उन्होंने परिशिष्ट 4 में भारत को किए गए निर्यातों के लिए बिक्री कीमत ढांचे के बारे में लेखा-जोखा नहीं दिया है, उन्होंने अंतर्देशीय बीमा, भंडार, प्रहस्तन (कारखानागत के पश्चात और एफ ओ बी के पूर्व प्रभार) और नौवहन प्रभार शुल्क, निकासी और एफ ओ बी के पश्चात प्रहस्तन प्रभारों का लेखा जोखा नहीं दिया है। निर्यातक की प्रश्नावली के परिशिष्ट 7 के अनुसार उन्होंने संयंत्र में विनिर्मित अन्य उत्पादों के लिए लाइसेंस शुदा क्षमता की जानकारी नहीं दी है। जहां तक फैक्ट्री लागत और भारत

को किए गए निर्यातों के लाभ का संबंध है, उन्होंने उस दर के बारेमें कोई उल्लेख नहीं किया है जिस पर संबद्ध माल के उत्पादन की खपत का उपयोग नहीं किया गया है। चूंकि कंपनी बहु-उत्पाद कंपनी प्रतीत होती है इसलिए संबद्ध वस्तु के विनिर्माण के लिए लागत आबंटन के आधार के बारे में पूर्ण सूचना को स्पष्ट करने की जरूरत है जो सामान्य सूचना भाग घं के अनुसार अपेक्षित है। चूंकि घरेलू विक्रियां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में होनी चाहिए अर्थात् ये उत्पाद लागत और विक्रियां सामान्य और प्रशासनिक खर्चों की वसूली करने वाली कीमत होनी चाहिए। यद्यपि उन्होंने परिशिष्ट 8,9 और 10 के उत्तर दिए हैं किन्तु उन्होंने उत्पादन, खरीद, बिक्री और कच्ची सामग्री का परिवहन, उपयोगिताएं, वित्त इत्यादि के संबंध में सरकार द्वारा, प्रदत्त प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष इमदाद यदि कोई हो, बारे में कोई टिप्पणी नहीं की है। उन्होंने पूर्ण जांच अवधि के लिए लाभ एवं हानि लेखा और तुलन पत्र भी प्रस्तुत नहीं किया है।

25. निर्यातक ने प्रारंभिक जांच परिणामों पर अपनी टिप्पणियों में 14 जनवरी, 2003 के पत्र के तहत जांच शुरूआत में प्रक्रियागत कमियों, सूचना की जांच के दायित्व और समर्थनकारी दस्तावेजों के अनुरोध, बाजारी अर्थव्यवस्था के दर्जे, उच्च लागत पर याचिकाकर्ता द्वारा अधिक आयात करने, भारतीय पाटनरोधी नियमों का उल्लंघन करते हुए सामान्य मूल्य के निर्धारण तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कोई स्पष्ट साक्ष्य न होने के बारे में अभ्यावेदन प्रस्तुत किया था (अनुबंध 1 में अन्य मुद्दों के अनुसार विस्तृत रूप में वर्णित)। तथापि, निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर के संबंध में प्रारंभिक जांच परिणामों में प्राधिकारी द्वारा व्यक्त अभिमतों और बाजारी अर्थव्यवस्था के दर्जे के संबंध में किसी विशिष्ट प्रश्न का वापस उत्तर नहीं दिया था। 17 अप्रैल, 2003 को हुई सार्वजनिक सुनवाई के बाद निर्यातक ने समय पर लिखित अनुरोध प्रस्तुत नहीं

किए और उसने कोई प्रत्युत्तर भी प्रस्तुत नहीं किया । इसके अलावा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 के उप पैरा 3 में यथाउल्लिखित विशिष्ट सूचना प्रस्तुत करने का अनुरोध करते हुए निर्यातक को एक पत्र भेजा गया था ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदण्डों पर विचार कर सके कि क्या:-

- (क) कच्ची सामग्रियों, प्रौद्योगिकी लागत, और श्रम, निविष्टि बिक्रियां और निवेश समेत कीमतों, लागतों और निविष्टियों के बारे में संबंधित फर्मों द्वारा निर्णय उन बाजारी संकेतों के प्रत्युत्तर में लिए जाते हैं जो इस बारे में महत्वपूर्ण सरकारी हस्तक्षेप के बिना मांग और आपूर्ति प्रदर्शित करते हैं और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत बाजार मूल्यों को काफी दर्शाते हैं:
- (ख) इस प्रकार की फर्मों के उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति पूर्व गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली खासकर परिसंपत्तियों के मूल्य ह्रास, अन्य बट्टे खाते वस्तु विनियम व्यापार और ऋणों की भरपाई के जरिए भुगतान के संबंध में, से अग्रेनीत महत्वपूर्ण परिवर्तनों के अध्यधीन होगी:
- (ग) इस प्रकार की फर्म दिवालिएपन और संपत्ति संबंधी कानून के अधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थायित्व की गारंटी देते हैं :
- (घ) मुद्रा दर का परिवर्तन बाजार दर पर किया जाता है :

निर्यातक से निम्नलिखित आंकड़े उपलब्ध करानेका अनुरोध किया गया था:-

- (i) संबद्ध उत्पाद के विनिर्माण के लिए कच्ची सामग्री तथा अन्य संगत निविष्टियाँ किस प्रकार प्राप्त की जाती हैं (लघु अथवा दीर्घकालिक संविदाएं, स्पॉट बाजार, विभिन्न कच्ची सामग्रियों के लिए आपूर्तिकर्ताओं की संख्या, स्थानीय अथवा विदेशी खरीद इत्यादि)
- (ii) कच्ची सामग्री की प्रत्येक मद के लिए आपूर्तिकर्ता के नाम एवं पते से संबंधित सूचना । क्या आपूर्तिकर्ता एक निजी व्यक्ति, कंपनी, राज्य अथवा स्थानीय/क्षेत्रीय प्राधिकारी है:
- यदि वह निजी व्यक्ति है, तो क्या इस व्यक्ति की राष्ट्रीयता चीनी है अथवा कोई अन्य राष्ट्रीयता है :
  - यदि वह एक कंपनी है, तो क्या वह एक चीनी कंपनी, विदेशी स्वामित्व वाली, या विदेशी स्वामित्व वाली कंपनी का कोई संयुक्त उपक्रम है:
  - यदि वह एक चीनी कंपनी है, तो क्या वह एक निजी स्वामित्व वाली कंपनी, राज्य स्वामित्व वाली कंपनी अथवा स्थानीय/क्षेत्रीय प्राधिकारियों के स्वामित्व वाली कोई कंपनी है। यदि यह एक ऐसी कंपनी है जिसके एक भाग का स्वामित्व राज्य अथवा स्थानीय/क्षेत्रीय प्राधिकरणों के पास है तो यह स्पष्ट किया जाए कि किस सीमा तक राज्य अथवा स्थानीय/क्षेत्रीय प्राधिकरण शामिल हैं:
  - यदि यह स्थानीय/क्षेत्रीय प्राधिकरण आदि है तो ब्यौरे दिए जाएं।
- (iii) उपयोगिता की प्रत्येक मद अर्थात् कोयला, बिजली, पानी एवं तेल के लिए आपूर्तिकर्ताओं के नाम/पते दिए जाएं । क्या इन उपयोगिताओं के लिए सामान्य दरें प्रभारित की जाती हैं अथवा क्या कोई विशेष अथवा सब्सिडी युक्त दर प्रभारित की जाती

है। जांच अवधि के दौरान प्रत्येक उपयोगिता के लिए प्रभारित दरें क्या हैं?

- (iv) क्या उत्पादक द्वारा प्रयुक्त कच्ची सामग्रियों के आयात पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई प्रतिबंध अथवा शर्त विद्यमान हैं? यदि हाँ, तो इन प्रतिबंधों अथवा शर्तों का उल्लेख किया जाए।
- (v) यह उल्लेख किया जाए कि उत्पादन के प्रयोजनार्थ श्रमिकों की व्यवस्था कैसे की जाती है। कितने कुशल कामगार, अकुशल कामगार, प्रबंधक आदि नियोजित किए गए हैं। जांच अंवधि में इनमें से प्रत्येक श्रेणी को भुगतान की गई औसत मजदूरी क्या है?
- (vi) कंपनी के कितने कर्मचारियों को पारिश्रमिक दिया जाता है (अर्थात् वेतन, समयोपरिवेतन, कंपनीकार अवकाश भत्ता आदि सहित पारिश्रमिक के सभी घटकों का विस्तार से उल्लेख किया जाए)। पारिश्रमिक की बारंबारता क्या है? कौन सी विधिक सत्ता अंतिम भुगतानकर्ता है? क्या कंपनी के कर्मचारी अथवा उनके परिवार आवास, चिकित्सा सुविधा, पेंशन, शिक्षा आदि जैसी अन्य सुविधाओं से लाभान्वित होते हैं? यह उल्लेख किया जाए कि इन सुविधाओं के लिए भुगतान कौन करता है। क्या कंपनी में विदेशी कर्मचारी नियोजित हैं, यदि हाँ तो अंतिम भुगतानकर्ता के स्थान के बारेमें अलग से उल्लेख किया जाए।
- (vii) क्या कीमत/मात्राओं के निर्धारण में कोई स्थानीय/क्षेत्रीय प्राधिकरण अथवा राज्य शामिल हैं। ऐसे दस्तावेजों (अंग्रेजी अनुवाद सहित) की एक

प्रति उपलब्ध कराएं जिनमें उनकी भागीदारी रही हो और संगत प्रावधानों का उल्लेख करें।

- (viii) प्रतिवर्ष कार्यालयी प्रयोजन के लिए लेखा संबंधी किस दस्तावेज को पंजीकरण कराना होता है? इन दस्तावेजों के सरकारी पंजीकरण में कौन से प्राधिकरण शामिल हैं?
- (ix) प्रमुख अस्थाई एवं स्थाई परिसंपत्तियों के लिए प्रयुक्त मूल्य हास और परिशोधन की पद्धतियों को स्पष्ट करने की जरूरत है। अधिग्रहण मूल्य तथा चालू खाता-गत मूल्य का उल्लेख किया जाए। प्रत्येक मामले में यह स्पष्ट किया जाए कि परिसंपत्ति किस प्रकार प्राप्त हुई थी (अर्थात् खुले बाजार में खरीदी गई थी, किसी शेयर धारक द्वारा कंपनी को अंतरित की गई थी, राज्य अथवा किसी तीसरी कंपनी द्वारा मुफ्त अथवा छूट पर दी गई थी)। यदि पिछले दस वर्षों के दौरान उपर्युक्त परिसंपत्तियों के मूल्य में परिवर्तन हुआ है तो उसके आधार का उल्लेख किया जाए और मूल्य में परिवर्तन के कारणों का उल्लेख किया जाए। चालू खाता-गत मूल्य पर प्रभाव भी बताया जाए।
- (x) उत्पादन और/अथवा वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त ऐसी सभी सुविधाओं(भूमि, भवन और मशीनों) की सूची जो कंपनी के स्वामित्व में नहीं हैं। पट्टे अथवा किसाएं हेतु संविदाएं प्रस्तुत की जाएं।
- (xi) धनराशि, पुनर्भुगतान, किश्तों और ब्याज दरों के बौरे देते हुए 31 मार्च 2002 की स्थिति के अनुसार कंपनी के पास चालू बिलों की सूची प्रस्तुत की जाए। यह स्पष्ट किया जाए कि क्या कंपनी

विशेष ऋण अथवा सब्सिडी स्कीमों(अर्थात् अधिमानी व्याज दरों तथा बढ़ी हुई पुनःभुगतान अवधियों, सब्सिडीयुक्त ऊर्जा आपूर्ति आदि) से लाभ प्राप्त करती है।

- (xii) यह स्पष्ट किया जाए कि किस प्रकार निविष्टियों की खरीद, निर्यात बिक्री की प्राप्तियों के परिवर्तन और लाभों के स्वदेश प्रेषण हेतु प्रयुक्त मुद्रा विनिमय दरें निर्धारित की जाती हैं। क्या ऐसी कोई एक दर है जिसे उपयोग में लाया जा सकता है? स्पष्ट करें क्या विदेशी मुद्राओं के उपयोग/परिवर्तन हेतु कंपनीपर कोई सीमा लागू होती है। यदि कंपनी के पास विदेशी मुद्रा आती है तो संगत प्राधिकारी द्वारा आवेदन का अनुमोदन (अंग्रेजी अनुवाद सहित) प्रस्तुत किया जाए।
- (xiii) क्या कंपनी पिछले पांच वर्षों में किसी समय वस्तु-विनिमय व्यापार अथवा प्रतिव्यापार में शामिल रही है जिसमें (विदेशी) उपकरण, सेवा अथवा वस्तु हेतु वस्तुओं अथवा जिसों का विनिमय शामिल रहा हो? और प्रस्तुत करें और प्रयुक्त लेखा पद्धतियों को स्पष्ट करें।
- (xiv) स्पष्ट करें कि क्या कंपनी पिछले पांच वर्षों में किसी समय क्षतिपूर्ति व्यापार (जिसे उत्पाद वापसी खरीद के रूप में भी जाना जाता है) में भी शामिल रही है जिसके तहत कोई (विदेशी) कंपनी ऐसी मशीनरी और उपकरण उपलब्ध कराती है जिसके लिए उसे सामान्यतः उत्पादित वस्तु के स्वरूप में वस्तु रूप में भुगतान प्राप्त होता है। स्पष्ट करें कि क्या ऐसे भुगतानों की संरचना ऋणों अथवा किश्तों में बिक्री के रूप में की गई थी। प्रयुक्त लेखा पद्धतियों को स्पष्ट करें।

**(xv) पिछले तीन वर्षों के दौरान कंपनी की लाभ वितरण नीति स्पष्ट की जाए ।**

26. उपर्युक्त बिंदुओं का निर्यातक से निर्धारित अवधि के भीतर उत्तर प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था । उनसे यह भी अनुरोध किया गया था कि वह 2 दिसंबर, 2002 के प्रारंभिक जांच-परिणामों के पैरा-10, पृष्ठ 35-37 पर प्रारंभिक जांच परिणामों में व्यक्त अभिमतों के संबंध में उत्तर प्रस्तुत करें । उनसे यह भी अनुरोध किया गया था कि वे इस जांच में उनके द्वारा प्राधिकारी को प्रस्तुत आंकड़ों के मौके पर सत्यापन के बारे में अपनी इच्छा की पुष्टि करें । प्राधिकारी को आज की तारीख तक उक्त पत्र का कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है ।
27. जैसाकि ज्ञात निर्यातकों तथा चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को सूचित किया गया है कि प्राधिकारी ने यथा संशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 और 8 के मद्देनजर याचिकाकर्ता के दावे की जांच करने का प्रस्ताव किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने उपर्युक्त पैराग्राफ में यथा उल्लिखित पूर्ण सूचना प्रस्तुत नहीं की है इसलिए इन परिस्थितियों में व्यापार के सामान्य स्वरूप में घरेलू बिक्रियों की जांच संभव नहीं है और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के नियम 2(i) और (ii) के साथ पठित धारा 9क (i)ग (i)(ii) में निहित उपबंधों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं किया जा सकता । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए हैं ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सके कि क्या:-

'(i)-(iv) संबंधित फर्मों का निर्णय.....विनियम दर परिवर्तन बाजार दर पर किए जाते हैं।'

28. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उपरोक्तानुसार सूचना के अभाव में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के अनुबंध 2(i) और (ii) के साथ पठित धारा 9 क(i) ग(i) और (ii) में निहित उपबंधों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं किया जा सकता। अतः प्राधिकारी पैरा 1 से 6 में निर्धारित सिद्धांतों को लागू करने में असमर्थ हैं और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर कार्रवाई करने के लिए बाध्यहैं।
29. इन परिस्थितियों में नियमानुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया जाता है। अतः उद्गम वाले देश में उत्पादन की परिकलित लागत, प्रशासनिक एवं सामान्य व्यय और उचित समायोजन करने के बाद लाभ की उपयुक्त राशि के संबंध में उपलब्ध सूचना को चीन जनवादी गणराज्य में संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य निकालने के आधार के रूप में लिया गया है।
30. मै0 झेजियांग मेडिसिन कं0 लि�0 चीन जनवादी गणराज्य के लिए प्राधिकारी द्वारा निर्धारित सामान्य मूल्य विटामिन-ई एसिटेट ग्रेड 96% और 93% के लिए क्रमशः \*\*\* अम.डा./कि.ग्रा. और \*\*\* अम.डा./कि.ग्रा. बनता है।

### निर्यात कीमत

31. प्राधिकारी ने एसिटेट ग्रेड के लिए जांच अवधि के दौरान सभी सौदों के लिए डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों को गणना में लिया है। फीड ग्रेड के बारे में प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य से भारत को किए गए निर्यातों की मात्रा और उनका

मूल्य परिकलित करने के लिए गौण स्रोतों अर्थात् आई बी आई एस, मुंबई द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों पर विश्वास किया है क्योंकि डी जी सी आई एंड एस द्वारा सौदे वार आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। तथापि, निर्यातक द्वारा प्रस्तुत आंकड़े आई बी आई एस (गौण स्रोत) के आंकड़ों जो संबद्ध देश से आयातों के सौदे वार विवरणों पर आधारित हैं, से चयनित सूचना के अनुरूप हैं। प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान, चीन जनवादी गणराज्य से भारत को 33645825 रुपए, 4147975 रुपए और 702990 रुपए मूल्य के क्रमशः 53931 किग्रा विटामिन ई एसिटेट (96% और इससे अधिक), 9040 किग्रा विटामिन ई (93%) एसिटेट ग्रेड और 24750 किग्रा विटामिन ई फीड ग्रेड (50%) का निर्यात किया गया है और उपरोक्त ग्रेडों के निर्यातों की प्रति किग्रा औसत निर्यात कीमत 13.17 अमरीकी डालर, 9.69 अमरीकी डालर और 6.00 अमरीकी डालर बनती है।

तथापि, प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि मैसर्स झेज़ियांग मेडिसिन कं० लि०, चीन जनवादी गणराज्य ने जांच अवधि के दौरान भारत को \*\*\* अमरीकी डालर और \*\*\* अमरीकी डालर प्रति किग्रा की ईकाई कीमत के साथ \*\*\* अमरीकी डालर और \*\*\* अमरीकी डालर प्रति किग्रा मूल्य की क्रमशः \*\*\* किग्रा विटामिन ई एसिटेट (96%) और \*\*\* किग्रा विटामिन ई एसिटेट (93%) का निर्यात किया है। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा दिए गए सुझाव के अनुसार अंतर्देशीय भाड़ा एवं बीमा और विदेशी भाड़ा एवं बीमा का समायोजन किया है। प्राधिकारी द्वारा कारखाना स्तर पर निर्यात कीमत निकालने के लिए अनुबंध में उल्लिखित छूटों को स्वीकार किया गया है। समायोजनों के पश्चात् विटामिन ई एसिटेट ग्रेड (96% और उससे ऊपर) के लिए \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा और (विटामिन ई एसिटेट 93 ग्रेड के लिए) \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा बनती है।

#### पाटन मार्जिन

32. सीमा शुल्क अधिनियम और पाटनरोधी नियमों में यथा निर्धारित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण को

शासित करने वाले सिद्धांतों का विस्तृत व्यौरा नियमावली के अनुबंध 1 में दिया गया है। मै0 झेज़ियांग मेडिसिन कं0 लि�0, चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध माल के निर्यात को पाटन मार्जिन का मूल्यांकन प्राधिकारी द्वारा विटामिन ई एसिटेट ग्रेड (96% और उससे ऊपर) के लिए निर्यात कीमत का \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा अथवा 78.8% और विटामिन ई एसिटेट ग्रेड (93%) के लिए निर्यात कीमत का \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा अथवा 139% पर किया गया है।

#### ज. चीन जनवादी गणराज्य के अन्य निर्यातक

33. प्राधिकारी ने जांच से संबंधित संगत सूचना और उपरोक्त धारा के अनुसार तर्क, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने के लिए चीन जनवादी गणराज्य के ज्ञात निर्यातकों को अवसर प्रदान किया। प्राधिकारी ने भारत में चीन के दूतावास को भी लिखा है। तथापि, चीन के किसी अन्य निर्यातक ने सूचना के लिए प्राधिकारी के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया है। याचिकाकर्ता द्वारा सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में किए गए दावे का भी अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा खण्डन नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों में नियमों के तहत सामान्य मूल्य का निर्धारण नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है। अतः मूलता के देश में उत्पादन की आकलित लागत के आधार पर उपलब्ध सूचना जमा बिक्री, प्रशासनिक और सामान्य खर्च और समुचित समायोजन करने के पश्चात लाभ की एक समुचित राशि को चीन जनवादी गणराज्य में संबद्ध वस्तुओं के सामान्य मूल्य को निकालने के लिए आधार के रूप में लिया गया है।
34. सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर चीन जनवादी गणराज्य के लिए सामान्य मूल्य विटामिन ई एसिटेट (96% और इससे अधिक) के लिए \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा, विटामिन-ई एसिटेट (93%) के लिए \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा और विटामिन ई ड्राई पावडर (50% फीडग्रेड) के लिए \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा निकाला गया है। कारखानाद्वारा पर निर्यात कीमत का परिकलन जांच

अवधि के दौरान चीन जनवादी गणराज्य के सहयोगी निर्यातक की न्यूनतम निर्यात कीमत को लेनेके बाद किया गया है। इन मापदण्डों के आधार पर कारखाना द्वार पर निवल निर्यात कीमत निकाली गई है और सहयोगी निर्यातकों के मामले के अनुसार समायोजनों की अनुमति देते हुए विटामिन-ई एसिटेट (96% और इससे अधिक) के लिए \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा, और विटामिन-ई एसिटेट ग्रेड (93%) के लिए \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा निकाली गई है। असहयोगी निर्यातकों के लिए फीड ग्रेड की निवल निर्यात कीमत आईबीआईएस, मुम्बई के जरिए उपलब्ध कराए गए सौदे वार आंकड़ों के अनुसार न्यूनतम निर्यात कीमत है। चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों के लिए पाटन मार्जिन का प्राधिकारी द्वारा आकलन विटामिन-ई एसिटेट ग्रेड (96% और इससे अधिक) के लिए निर्यात कीमत का \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा अथवा 86%, विटामिन-ई एसिटेट ग्रेड (93%) के लिए \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा अथवा निर्यात कीमत का 183% और \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा या विटामिन ई (50%) फीड ग्रेड के लिए क्रमशः निर्यात कीमत का \*\*\* अमरीकी डालर/किग्रा अथवा 95.9% किया गया है।

### पाटन मार्जिन

**चीन जनवादी गणराज्य से विटामिन-ई के आयात के लिए पाटन मार्जिन की गणना  
(अम.डालर)**

झेझियांग मेडिसिन लिं जनवादी गणराज्य	कं. चीन	वर्गीकरण		एनवी	ईपी	डीएम	डीएम%
		विटामिन-ई एसिटेट	96%	***	***	***	78.82
		विटामिन-ई एसिटेट	93%	***	***	***	139.31
अन्य निर्यातक चीन जन.गण.		विटामिन-ई एसिटेट	96%	***	***	***	86.7%
		विटामिन-ई एसिटेट	93%	***	***	***	183.8%
		विटामिन-ई ड्राई पावडर	50%	***	***	***	95.9%

## 35. क्षतिः

उपरोक्त नियम 11 अनुबंध-II के तहत जब क्षति के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्ष में ..... पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उसके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति, का निर्धारण शामिल होगा।

कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जाँच करना आवश्यक समझा जाता है कि पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है, अथवा कीमत वृद्धि में अन्यथा रुकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती ।

36. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जाँच करने के लिए प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमों के अनुबंध-II (iv) के अनुसार ऐसे संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे - उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि ।

### याचिकाकर्ताओं के विचार

37. 1. विटामिन-ई औषधि कीमत नियंत्रण आदेश के अंतर्गत आता है । इस प्रकार इस उत्पाद की कीमतें भारत सरकार द्वारा नियंत्रित होती हैं । ऐसा मामला होने की वजह से

याचिकाकर्ता के पास भारत सरकार द्वारा अधिसूचित कीमतों पर अपना माल बेचने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

2. याचिकाकर्ता विटामिन-ई का प्रयोग करके कई उत्पाद बनाता है। याचिकाकर्ता इन वस्तुओं के अन्य उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा करता है। जहाँ याचिकाकर्ता को अपनी उच्च उत्पादन लागत पर अपनी वस्तुओं को अन्तरित करने के लिए बाध्य किया गया है वहीं अन्य उत्पादक ऐसी अनुचित कीमतों पर हुए आयात से अनुचित लाभ प्राप्त कर रहे हैं। अतः याचिकाकर्ता को न केवल अपनी सौदा बिक्रियों में बल्कि अपने कैप्टिव खपत में घाटा हो रहा है।
3. विटामिन-ई का बाजार, जहाँ बड़ी मात्रा में आयात होने की सूचना है, को एसिटेट ग्रेड और फीड ग्रेड दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। फीड ग्रेड की लागत और कीमत एसिटेट ग्रेड की कीमत की लगभग आधी है क्योंकि इसमें 50% विटामिन-ई और कम मात्रा में कुछ अभिवर्धक शामिल होते हैं।
4. प्रस्तावित जांच अवधि (जनवरी, 2001-मार्च, 2002) में घरेलू उद्योग के निष्पादन में काफी परिवर्तन आया है। याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि क्षति संबंधी विश्लेषण जांच अवधि में तिमाही से तिमाहीवार अथवा माहवार आधार पर किया जाना चाहिए।
5. चीन से आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है और विटामिन-ई के कुल आयात में चीन जनवादी गणराज्य के हिस्से में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के हिस्से में पर्याप्त गिरावट आई है।

6. निर्यात कीमतों में गिरावट आने के कारण प्रत्यक्ष रूप से आयातों के पहुँच मूल्य में गिरावट आई है। तिमाही रुझान, विशेष रूप से फीड ग्रेड में रुझान के विश्लेषण से आगे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग के हिस्से में तब तक गिरावट आती रही जब तक घरेलू उद्योग ने अपनी कीमत नहीं घटाई।
7. यद्यपि, एसिटेड ग्रेड के संबंध में घरेलू उद्योग के समग्र उत्पादन और क्षमता उपयोग में 2001 तक वृद्धि हुई, तथापि तिमाहीवार सूचना यह प्रदर्शित करती है कि जांच की अवधि के दौरान उत्पादन में गिरावट आई है।
8. चूंकि कंपनी के पास काफी कैप्टिव खपत है अतः एसिटेट ग्रेड के उत्पादन के घाटे के रूप में पाटन का प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है। याचिकाकर्ता ने यह भी बताया है कि जांच अवधि के दौरान सौदा बिक्री मात्रा में कामी गिरावट आई है और पर्याप्त कैप्टिव खपत तथा उत्पादन में गिरावट के बावजूद संबद्ध वस्तुओं का स्टॉक बढ़ा है।
9. फीड ग्रेड के मामले में, याचिकाकर्ता ने कीमतों को पर्याप्त रूप से घटाया है। याचिकाकर्ता ने बताया है कि प्रस्तावित जांच अवधि के अन्दर जब तक याचिकाकर्ता ने अपनी बिक्री कीमत कम नहीं की थी उसकी मात्रा में गिरावट आ रही थी। तथापि, बिक्री कीमतों में गिरावट से बिक्री मात्रा में कुछ वृद्धि हुई तथापि यह इष्टतम से कम बनी रही।
10. एसिटेट ग्रेड के मामले में, याचिकाकर्ता अपने लागत कम करने संबंधी उपायों की वजह से अपनी लाभप्रदता को सुधारने में समर्थ रहा है। इसी समय याचिकाकर्ता को मात्रा के महत्वपूर्ण घाटे के रूप में इस क्षेत्र में कीमत में कमी न करने का खामियाजा भुगतना पड़ा। फीड ग्रेड के मामले में याचिकाकर्ता की लाभप्रदता पर भारी प्रतिकूल

प्रभाव पड़ा है जो याचिकाकर्ता पहले लाभ कमा रहा था उसे बहुत अधिक घाटा नहीं उठाना पड़ा ।

सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात् उन्होंने अनुरोध किया है कि:

38. प्रारंभिक जांच परिणामों और सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात् उन्होंने अनुरोध किया है कि उन्होंने पहले ही पर्याप्त सूचना उपलब्ध करायी थी (गोपनीय तथा अगोपनीय आधार पर) जो यह दर्शाती है कि संबद्ध देश से संबद्ध वरस्तु के पाठन के चलते घरेलू उद्योग को क्षति उठानी पड़ी है । निम्नलिखित मापदंड घरेलू उद्योग को हुई क्षति प्रदर्शित करते हैं ।
1. चीन से आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है । यदि जांच अवधि का विश्लेषण तिमाहीवार आधार पर किया जाए तो यह वृद्धि और भी महत्वपूर्ण हो जाती है ।
2. विटामिन-ई के कुल आयातों में चीन के हिस्से में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है ।
3. विटामिन-ई की मांग में चीन के हिस्से में भारी वृद्धि हुई है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के हिस्से में अत्यधिक गिरावट आयी है ।
4. चीन से निर्यात कीमतों में महत्वपूर्ण ढंग से कमी आयी है ।
5. निर्यात कीमत में इस कमी के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप आयातों के पहुंच मूल्य में कमी हुई है ।
6. तिमाहीवार रुझानों (विशेषतः फीड ग्रेड में) के विश्लेषण से आगे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग के हिस्से में तब

तक भारी कमी होती रही है जब तक कि घरेलू उद्योग ने अपनी कीमतें नहीं घटायी। एक बार घरेलू उद्योग ने अपनी कीमतें घटायी तो बिक्री मात्रा में पुनः वृद्धि हो गई (जो अभी भी इष्टतम नहीं है)।

यह स्पष्ट है कि चीन से हुए आयात साफ तौर पर घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव डाल रहे हैं।

निर्यातक मै0 जैड एम सी लि0 चीन जनवादी गणराज्य  
द्वारा किए गए अनुरोध

39. निर्यातकों ने प्राधिकारी से 96%, 93% और 50% के खुले बाजार में बिक्रियों का प्रतिशत, याचिकाकर्ता के कारोबार में इन ग्रेडों का प्रतिशत, खुले बाजार में किए गए वाणिज्यिक कार्यकलापों का मूल्यांकन तथा पिछले 10 वर्षों में किए गए निर्यात के रूझान के बारे में सार्थक जानकारी का खुलासा करने का अनुरोध किया है। इसके अलावा उन्होंने प्राधिकारी से नकद प्रवाह, वस्तु सूची, रोजगार, मजदूरी, समृद्धि, पूंजीनिवेश जुटाने की क्षमता, उत्पादकता, क्षमता उपयोग, निवेश पर आय तथा लाभप्रदता से संबंधित व्यौरे का अलग से विश्लेषण करने का अनुरोध किया है। उन्होंने आगे यह तर्क दिया है कि इस बात का कोई स्थापित साक्ष्य नहीं है कि याचिकाकर्ता को कोई वास्तविक क्षति उठानी पड़ रही है। उन्होंने आगे यह अभ्यावेदन किया है कि प्राधिकारी विश्लेषण और कारणात्मक संबंध के मुद्दे को प्रस्तुत करने में विफल रहे थे। उन्होंने अनुरोध किया है कि जांचकर्ता प्राधिकारी का यह दायित्व है कि वे इस बात का मूल्यांकन करें कि क्या कथित तौर पर पाटित वस्तु के कथित आयात के अलावा अन्य कारक क्षति के लिए वास्तविक रूप से उत्तरदायी है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

40. घरेलू उद्योग को हुई क्षति का विश्लेषण रिकार्ड में उपलब्ध सूचना और पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा किए गए सत्यापन के आधार पर किया गया है। घरेलू उद्योग की क्षति का मूल्यांकन करने के प्रयोजनार्थ निम्नलिखित मापदण्डों का विश्लेषण किया गया:-

#### (i) आयातों की मात्रा

आयातों की मात्रा का पता लगाने के लिए प्राधिकारी ने डीजीसीआई एण्ड एस, कलकत्ता द्वारा जांच अवधि के लिए उपलब्ध कराए गए संबद्ध वस्तुओं और संबद्ध देश तथा चीन जनवादी गणराज्य से इतर देश से आयातों के विश्लेषणवार सौदों को लेने के बाद सूचना के गौण स्रोत अर्थात् आईबीआईएस मुम्बई के आयात संबंधी आंकड़ों पर विचार किया है। प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा विटामिन-ई (एसिटेट के साथ-साथ फीड ग्रेड दोनों के लिए) के लिए उपलब्ध कराए गए चीन जनवादी गणराज्य के सहयोगी निर्यातकों द्वारा दिए गए निर्यात संबंधी आंकड़ों और गौण स्रोतों की सूचना (आईबीआईएस, मुम्बई से प्राप्त सौदेवार सूचना) की जांच भी की है। इन आंकड़ों की जांच करने के पश्चात् प्राधिकारी नोट करते हैं कि गौण स्रोतों द्वारा दिखाई गई मात्रा और निर्यातकों के आंकड़े मोटे तौर पर जांच अवधि और पिछले वर्षों के अनुरूप हैं।

घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चीन जनवादी गणराज्य से आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है और उनके हिस्से में भी अत्यधिक बढ़ोत्तरी हुई है। प्राधिकारी ने एसिटेट और फीड ग्रेड दोनों के लिए जांच अवधि और इससे दो वर्ष पहले के आयात संबंधी आंकड़ों की जांच

की है और इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि चीन जनवादी गणराज्य से हुए आयातों में वास्तविक रूप में तेजी से वृद्धि हुई है और आयातों की मात्रा के मामले में यह वृद्धि अधिक स्पष्ट है। प्राधिकारी पाते हैं कि जांच अवधि के दौरान एसिटेट ग्रेड में पिछले वर्ष की तुलना में 300% से अधिक और फीड ग्रेड में 900% से अधिक की वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों से पहली तिमाही (2002 की पहली तिमाही) में आयात एसिटेट ग्रेड और फीड ग्रेड के लिए क्रमशः 60% और 900% से अधिक रहे हैं। इस प्रकार प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि पिछले वर्ष और जांच अवधि के दौरान भी, जब तिमाहीवार विश्लेषण किया गया था, की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के लिए चीन जनवादी गणराज्य से आयातों में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों में 467% की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि अन्य देशों के मामले में इसमें 350% की वृद्धि हुई है। प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि संबद्ध देशों से आयातों में पिछले वर्ष की तुलना में और जांच अवधि के भीतर तिमाहीवार तुलना के अनुसार समग्र रूप से अत्यधिक वृद्धि हुई है।

चीन जनवादी गणराज्य से आयातों की मात्रा में समग्र वृद्धि

	इकाई	1998	1999	2000	जांच की अवधि
एसिटेट	किग्रा	0	2000	15300	50376.8
फीड	किग्रा	0	13000	2000	19800
कुल चीन	किग्रा	0	15000	17300	70176.8
अन्य देश	किग्रा	18739	115112	40255	66342
कुल आयात	किग्रा	18739	130112	57555	136518.8

जांच अवधि के लिए आयातों (किग्रा. में समग्र मात्रा) से संबंधित तिमाहीवार सूचना

कुल चीन							
		मा.12001	मा.2	मा.3	मा.4	मा.12002	
कुल चीन	किग्रा.	11000	9750	16273	32998	17700	
अन्य	किग्रा.	5895	14773	18195	32710	11355	
कुल आयात	किग्रा.	16895	24523	34468	65708	29055	

### (ii) आयातों का बाजार हिस्सा

प्राधिकारी पाते हैं कि विटामिन-ई के समस्त आयातों में चीन के हिस्से में पिछले वर्ष की तुलना में 70% की वृद्धि हुई और उसके पास जांच अवधि के दौरान 51% बाजार हिस्सा रहा है जबकि अन्य देशों से हुए आयात आधार वर्ष(1998) के दौरान आयात को 100 मानते हुए पिछले वर्ष के 69% से घटकर जांच अवधि के दौरान 48% रह गए हैं।

### कुल आयातों में चीन जनवादी गणराज्य से हुए आयातों का बाजार हिस्सा(%)

आयातों में बाजार हिस्सा		1998	1999	2000	जांच अवधि वार्षिकीकृत
चीन	%	0	11.53	30.06	51.40
अन्य देश	%	100	88.47	69.94	48.60
कुल	%	100	100.00	100.0	100.0

### तिमाहीवार जांच अवधि के दौरान कुल आयातों में बाजार हिस्सा(%)

	मा.12001	मा.2	मा.3	मा.4	मा.12002
चीन	65.11	39.76	47.21	50.22	60.92
अन्य	34.89	60.24	52.79	49.78	39.08
जोड़	100	100	100	100	100

**(iii) मांग के अनुपात में संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा**

प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की विचारधीन उत्पाद की बिक्रियों में कुल आयातों को जोड़कर देश में कुल मांग का परिकलन किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं की कुल मांग में चीन जनवादी गणराज्य का हिस्सा वर्ष 1999 (आधार वर्ष 1998 के लिए कोई आयात नहीं) के दौरान 5.46% से बढ़कर जांच अवधि वार्षिकीकृत के दौरान 22% हो गया है जबकि अन्य आयातों का हिस्सा 19.7% से मामूली तौर पर बढ़कर 21.6% हुआ है। कुल मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा 1998 के दौरान 87% से घटकर जांच अवधि के दौरान वार्षिकीकृत 55% हो गया है। इस प्रकार प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि कुल मांग के हिस्से के रूप में संबद्ध वस्तु के आयातों के बाजार हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई है और इसमें पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि हुई है।

**कुल मांग में आयातों के बाजार हिस्से (समग्र और प्रतिशत हिस्सा)**

मांग	इकाई	1998	1999	2000	जांच अवधि वार्षिकीकृत
आयात चीन	किंग्रा	0	15000	17300	70176.8
अन्य	किंग्रा.	18739	115112	40255	66342
कुल आयात	किंग्रा.	18739	130112	57555	136518.8
झांग	किंग्रा.	146695	274902	203669	306439.8

मांग में हिस्सा	1998	1999	2000	जांच की अवधि
चीन	0	5.46	8.49	22.90
अन्य	12.77	41.87	19.76	21.65
कुल आयात	12.77	47.33	28.26	44.55
घरेलू उद्योग	87.23	52.67	71.74	55.45

उपर्युक्त आंकड़ों से प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि समग्र घरेलू बाजार में पिछले वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के हिस्से में कमी हुई है। प्राधिकारी का आगे यह निष्कर्ष है कि कुल मांग के हिस्से के रूप में संबद्ध देशों को हुए आयातों के बाजार हिस्से में भागी वृद्धि हुई है और इसमें पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान महत्वपूर्ण ढंग से वृद्धि हुई है।

#### **(iv) बिक्री में प्राकृतिक एवं संभावित कमी**

एसिटेट तथा फीड ग्रेड दोनों ग्रेडों के लिए वर्ष 2001 की दूसरी तिमाही तक लगातार सुधार प्रदर्शित होता है। तथापि वर्ष 2001 की दूसरी तिमाही के बाद जांच अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में भारी गिरावट आई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि बिक्री मात्रा में आधार वर्ष से दूसरी तिमाही तक वृद्धि का रुख देखा गया है और इसके बाद जांच अवधि की बाद की तिमाहियों के दौरान इसमें गिरावट का रुख प्रदर्शित होता है।

#### **(v) उत्पादन, बिक्री मात्रा, क्षमता उपयोग**

प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि वर्ष 2001 तक एसिटेट ग्रेड की दृष्टि से घरेलू उद्योग के समग्र उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है, परन्तु तिमाही-वार सूचना से यह संकेत मिलता है कि जांच अवधि के दौरान उत्पादन और बिक्री मात्रा में कमी हुई है जबकि वर्ष 2000 की तुलना में वार्षिकीकृत जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता की बिक्री मात्रा में मामूली गिरावट आई है। फीड ग्रेड के संबंध में जांच अवधि के दौरान उत्पादन एवं बिक्री मात्रा में गिरावट आई है, यद्यपि इसमें पिछले वर्ष की तुलना में असीम वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग द्वारा यह बताया गया है कि जांच अवधि के पश्चात् उन्हें फीड ग्रेड का उत्पादन बंद करना पड़ा था। क्षमता उपयोग के रुख भी उत्पादन के रुख के समान हैं क्योंकि सृजित क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह नोट किया गया है कि एसिटेट ग्रेड बाजार में बिक्री के लिए और फीड ग्रेड तथा अन्य सामग्री के उत्पादन के लिए भी उत्पादित किया जाता है। यह भी नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की आबद्ध खपत में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है। तथापि यह देखा गया है कि याचिकाकर्ता की व्यापारिक बिक्री मात्रा में भारी गिरावट आई है और वर्ष 2001 की इसी तिमाही में बिक्री मात्रा की तुलना में वर्ष 2002 की पहली तिमाही में बिक्रियों में भारी कमी हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के संबंध में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को मात्रा संबंधी क्षति उठानी पड़ी है।

## (vi) प्रारंभिक तथा अंतिम स्टॉक

<u>तैयार माल का अंतिम स्टॉक निम्नानुसार</u>		
	विटामिन ई एसिटेट	विटामिन-ई 50% एनिमल
	<u>किग्रा. सूचीबद्ध</u>	<u>किग्रा. सूचीबद्ध</u>
जन.-01	<u>100.00</u>	<u>100.00</u>
मार्च-01	<u>113.69</u>	<u>101.69</u>
जून-01	<u>52.41</u>	<u>137.29</u>
सित.-01	<u>108.99</u>	<u>347.46</u>
दिस.-01	<u>105.91</u>	<u>40.68</u>
मार्च-02	<u>134.55</u>	<u>199.58</u>

  

<u>कच्ची सामग्री का अंतिम स्टॉक निम्नानुसार</u>		
	आइसोफाइटोल	टीएमपी
	<u>किग्रा. सूचीबद्ध</u>	<u>किग्रा. सूचीबद्ध</u>
जन.-01	<u>100.00</u>	<u>100.00</u>
मार्च-01	<u>134.58</u>	<u>80.00</u>
जून-01	<u>159.45</u>	<u>80.00</u>
सित.-01	<u>109.85</u>	<u>176.67</u>
दिस.-01	<u>175.75</u>	<u>184.68</u>

जांच अवधि के दौरान अंतिम स्टॉकों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है जिससे यह संकेत मिलता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के वस्तु सूची संबंधी स्थिति में भारी परिवर्तन हुआ है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आबद्ध खपत के नगण्य होनेके बावजूद भी याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तुओं के बढ़ते हुए स्टॉक से प्रभावित हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस मापदण्ड की दृष्टि से घरेलू उद्योग को क्षति उठानी पड़ी है।

## (vii) उत्पादकता एवं रोजगार

घरेलू उद्योग की उत्पादकता जिसकी गणना संबद्ध वस्तु के प्रति कर्मचारी उत्पादन के अनुसार की गई है, मैं भी उत्पादन जैसा ही रुख रहा है। तथापि, वर्ष 2001 की दूसरी तिमाही में उत्पादकता की स्थिति बिंगड़ने लगी थी। घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में गिरावट आई, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि हुई। तथापि 98 और उसके आगे हुए सुधार के पश्चात जांच अवधि के दौरान पुनः उत्पादकता में कमी हुई। प्राधिकारी ने इस मापदण्ड की दृष्टि से घरेलू उद्योग को क्षति होने का निष्कर्ष नहीं निकाला है।

**(viii) घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारक  
कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री तथा कीमत ह्रास**

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के सिद्धांत (iv) में उल्लेख है कि:-

संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री लाभ, उत्पादन बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेशों पर आय या क्षमता के उपयोग में प्राकृतिक एवं संभावित कमी : घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक पाटन मार्जिन की मात्रा: नकदी प्रवाह, वस्तु सूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूँजी निवेश बढ़ाने की क्षमता पर वास्तविक एवं संभावित ऋणात्मक प्रभाव सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों एवं संकेतकों का मूल्यांकन शामिल होगा ।

कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों की दृष्टि से पाटित आयातों द्वारा महत्वपूर्ण कीमत कटौती की गई है अथवा क्या अन्यथा ऐसे आयातों से कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी हो गई है । प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु (एसिटेट ग्रेड एवं फीड ग्रेड दोनों) के आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना निवल बिक्री वसूली के साथ की है और यह पता लगाया है कि पाटित आयातों से कीमत में अत्यधिक कटौती की गयी है । आयातों के पहुंच मूल्य को घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से काफी कम पाया गया है ।

प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता के इस दावे की जांच की है कि घरेलू उद्योग को विटामिन ई एसिटेट तथा फीड ग्रेड की बिक्री में नुकसान उठाना पड़ रहा है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमतों पर बिक्री क्षति का मूल्यांकन करने का एक महत्वपूर्ण संकेतक है । प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद की क्षतिरहित कीमत की गणना की है और कम कीमतों पर बिक्री की मात्रा मालूम करने के लिए इसकी तुलना पहुंच मूल्य के साथ की है । यह विश्लेषण दर्शाता है कि कम कीमतों पर बिक्री के महत्वपूर्ण स्तर के कारण घरेलू उद्योग को नुकसान उठाना पड़ रहा है । इसके अलावा, आयातों से घरेलू बाजार में कीमतों पर काफी दमनकारी/ह्रासकारी प्रभाव पड़ रहा था: जिसके कारण घरेलू उद्योग पाटित आयातों के महेनजर

अपनी बिक्री कीमत को, विशेषरूप से फीड ग्रेड के संबंध में, नहीं बढ़ा पा रहा था। इस प्रकार उपलब्ध साक्ष्यों की जांचसे पता चलता है कि घरेलू उद्योग को समग्र रूप से जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की अपनी बिक्रियों में नुकसान उठाना पड़ा है। प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती की मात्रा का निर्धारण किया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि संबद्ध देशों से हुए पाठन के कारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को भारी कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री करनी पड़ी है।

### एसिटेट ग्रेड के संबंध में कीमत कटौती(रु० में)

	1999	2000	मा.1 2001	मा.2	मा.3	मा.4	मा.1200 2	जांच अवधि वार्षिकीकृत
सीआई एफ	***	***	***	***	***	***	***	***
पहुंच मूल्य	***	***	***	***	***	***	***	***
बिक्री कीमत	***	***	***	***	***	***	***	***
कीमत कटौती	***	***	***	***	***	***	***	***

रु०		फीड ग्रेड में कीमत कटौती						
सीआई एफ	***	***	***	***		***	***	***
पहुंच मूल्य	***	***	***	***		***	***	***
बिक्री कीमत	***	***	***	***		***	***	***
कीमत कटौती	***	***	***	***		***	***	***

### (ix) बिक्री कीमत और लाभप्रदता

प्राधिकारी को एसिटेट ग्रेड की बिक्री वसूली में किसी कमी का पता नहीं लगा है। पिछले वर्ष की तुलना में एसिटेट ग्रेड के मामले में उनकी

लाभप्रदता में सुधार हुआ है, यद्यपि जांच अवधि की भिन्न-भिन्न तिमाहियों के दौरान तथा पिछले वर्षों की तुलना में भी मात्रा के मामले में भारी घाटा हुआ है। फीड ग्रेड के संबंध में प्राधिकारी मानते हैं कि तिमाही-वार सूचना के अनुसार तथा पिछले वर्ष की तुलना में भी जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता की कीमतों में महत्वपूर्ण ढंग से कमी हुई है। फीड ग्रेड के संबंध में भी उनकी लाभप्रदता पर बुरा प्रभाव पड़ा है, जो पहले लाभ कमा रही थी, जो बाद में इसमें भारी घाटों में बदल गए।

#### (x) पाटन मार्जिन की मात्रा

चीन जनवादी गणराज्य से पाटन मार्जिन न केवल अधिकतम सीमा से अधिक है बल्कि बहुत महत्वपूर्ण भी है।

#### (xi) निवेशों पर आय

वर्ष 98 और उसके बाद निवेशों पर आय में सुधार हुआ है। तथापि 98 से 2000 तक के सुधार के पश्चात् जांच अवधि की बाद की तिमाहियों के दौरान इसमें कमी होनी शुरू हो गई है।

#### (xii) नकदी प्रवाह पर वास्तविक तथा संभावित नकारात्मक प्रभाव

संबद्ध वस्तु के उत्पादन एवं बिक्री से प्राप्त नकद लाभ में 98 से जांच अवधि तक सुधार प्रदर्शित होता है।

#### (xiii) मजदूरी

कुल मजदूरी में वर्ष 98 से जांच अवधि तक मामूली वृद्धि प्रदर्शित हुई है। तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसे कर्मचारियों की संख्या में कमी और इस तथ्य कि यह एक बहु-उत्पाद कंपनी है, के आलोक में देखा जाए।

**(xiv) संवृद्धि**

यद्यपि संबद्ध वस्तुओं की मांग में वर्ष 98 से जांच अधिकारी तक भारी वृद्धि हुई है, परन्तु घरेलू उद्योग की संवृद्धि संबद्ध वस्तु की मांग में हुई वृद्धि से कम रही है।

**(xv) नये निवेश करने की क्षमता**

घरेलू उद्योग एक बहु-उत्पाद कंपनी है और यह इस मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के संबंध में संगत मापदंड नहीं हो सकता है।

**क्षति के संबंध में निष्कर्षः**

41. पूर्वोक्त से प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जाते हैं:-
  1. संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में समग्र रूप से अत्यधिक वृद्धि हुई है।
  2. भारत में विटामिन ई के कुल आयातों के संबंध में संबद्ध देश से हुए आयातों में वृद्धि हुई है।
  3. भारत में विटामिन ई की कुल मांग के संबंध में संबद्ध देश से हुए आयातों में वृद्धि हुई है।
  4. आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में अत्यधिक कटौती हो रही है।
  5. याचिकाकर्ता को कम कीमत पर बिक्री से नुकसान हो रहा है क्योंकि संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत अथवा उचित बिक्री कीमत से कम है।
  6. घरेलू उद्योग को फीड ग्रेड की बिक्री के कारण घाटा हुआ है। तथापि ऐसिटेट ग्रेड में उनकी लाभप्रदता में वृद्धि हुई है। यद्यपि उनकी बिक्री मात्रा में घाटा हुआ है।
  7. घरेलू उद्योग को केवल ऐसिटेट ग्रेड में मात्रा संबंधी क्षति और फीड ग्रेड में मात्रा और कीमत संबंधी क्षति हुई है। कुल मिलाकर घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

### कारणात्मक संबंधः

42. इस बात का निर्धारण करने में कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई थी, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा हैः-

(i) यह प्रमाणित करने में कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि संबद्ध देश से आयात की मात्रा में वृद्धि के परिणामस्वरूप याचिकाकर्ता के बाजार हिस्से में कटौती हुई है। विटामिन ई (एसिटेट और साथ ही साथ फीड ग्रेड) के पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करने में प्राधिकारी ने पाया है कि इनकी रासायनिक विशेषताओं और उपयोग में काफी समानता के आधार पर ये घरेलू तौर पर उत्पादित विटामिन ई (एसिटेट और साथ ही साथ फीड ग्रेड) के समान वस्तु हैं। संबद्ध देश से विटामिन ई के आयात का प्रभाव घरेलू तौर पर उत्पादित विटामिन ई की मांग को कम करने में हुआ है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि संबद्ध वस्तु के आयातों में पर्याप्त वृद्धि होने से आयातों में वस्तुतः काफी वृद्धि हुई है। इसके फीड ग्रेड के मामले में इसकी उचित बिक्री कीमत से कम कीमत पर बेचने के लिए तथा एसिटेट ग्रेड के मामले में बिक्री में कमी करने के लिए घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी करनी पड़ी अतः प्राधिकारी ने पाया कि चीन जनवादी गणराज्य से पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं के पर्याप्त रूप में आयातों से घरेलू उद्योग को विटामिन ई फीड ग्रेड की अपनी बिक्री कीमतों को अलाभकारी स्तर तक कम करने को बाध्य होना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमतों में कटौती करनी पड़ी। एसिटेट ग्रेड के बारे में भी संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत में कटौती करनी पड़ी। एसिटेट ग्रेड के बारे में भी संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत में कटौती हुई है। प्राधिकारी ने संबद्ध देश को छोड़कर अन्य देशों से आयातों की पहुंच कीमत की जांच की है और उन्होंने पाया कि गैरसंबद्ध देश की पहुंच कीमत चीन जनवादी गणराज्य की पहुंच कीमत से काफी अधिक है और कुल आयातों के हिस्से में पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान कमी आई है।

(ii) चीन जनवादी गणराज्य से हुए आयातों से भारतीय बाजार में उत्पादित विटामिन ई 50% सूखे पाउडर (फीड ग्रेड) की कीमतें इस हद तक कम हुई हैं कि घरेलू उद्योग अपने उत्पादन की पूरी लागत को भी वसूल करने और भारत में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री से समुचित लाभ अर्जित नहीं कर सका।

अतः प्राधिकारी उपरोक्त से यह नोट करते हैं कि चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तुओं (एसिटेट और फीड ग्रेड दोनों) के आयात घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम कीमत पर हुए हैं। अन्य देशों से आयात संबद्ध देशों से काफी कम हुए और अन्य देशों से होने वाले आयात की कीमतें संबद्ध देशों की कीमतों से अधिक हैं। प्राधिकारी को मांग में कमी, खपत के स्वरूप में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाओं और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा संबंधी कोई साक्ष्य नहीं मिला है। यह भी नोट किया गया है कि विकास प्रौद्योगिकी घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं रही है। ये परिमापक सामूहिक और संचयी रूप से संकेत देते हैं कि याचिकाकर्ता को संबद्ध देशों से पाठित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

43. क्षति निर्धारण करने के प्रयोजनाथ आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए याचिकाकर्ता कंपनी के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत के साथ की गई है।

### भारतीय उद्योग के हित

44. सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को नुकसान हो रहा है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः बहाली करना है जो कि देश के सामान्य हित में है।

प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तु के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावात होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ा हो, किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार से उचित प्रतिस्पर्धा

कम नहीं होगी, इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रहेंगे।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से चीन जनवादी गणराज्य से आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे, इसलिए उपभोक्ताओं के लिए इसउत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता के पास तब भी आपूर्ति के दो अथवा अधिक स्रोत हो सकते हैं।

### निष्कर्ष

45. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:
- (i) संबद्ध देश से भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।
  - (ii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति उठानी पड़ी है।
  - (iii) यह क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है।
46. प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए विटामिन-ई के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन उपर्युक्त पैराग्राफ में दर्शाया गया है। प्राधिकारी पाटन मार्जिन केबराबर या इससे कम के पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जिसे यदि लगाया जाए तो घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी। क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अधिक के लिए याचिकाकर्ता कंपनी के लिए निर्धारित क्षतिरहित कीमत के साथ की गई है। इसलिए प्राधिकारी उस सामान पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं जिनका विवरण निम्न तालिका के कॉलम (3) में विविरित है और जो कॉलम (2) में तदनुरूपी प्रविष्टि में यथाविनिर्दिष्ट उक्त सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची की टैरिफ मद्दों अथवा उपशीर्ष के अंतर्गत आते हैं जिनकी विनिर्दिष्टता कालम (5) में तदनुरूपी प्रविष्टि में यथाविनिर्दिष्ट देशों के मूल से उक्त

तालिका के कालम (4) में विनिर्दिष्ट है और कालम (8) में तदनुरूपी प्रविष्टि में यथा विनिर्दिष्ट निर्यातकों द्वारा कालम (6) में तदनुरूपी प्रविष्टि में यथा विनिर्दिष्ट देशों से निर्यात किए जाने पर कालम (7) में तदनुरूपी प्रविष्टि में यथा विनिर्दिष्ट उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया गया हो और भारत में आयात किया गया हो तो उस दर पर पाटनरोधी शुल्क लगायाजाएगा जो कालम (9) में तदनुरूपी प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट राशि जो कालम (11) में तदनुरूपी प्रविष्टि में यथा विनिर्दिष्ट मुद्रा में होगी और यह दर उक्त तालिका के कालम (10) में तदनुरूपी प्रविष्टि में यथा विनिर्दिष्ट मापों की प्रति इकाई पर लागू होगी तथा ऐसी आयातित वस्तुओं के पहुँच मूल्य के बीच अन्तर के समान होगा और माप की प्रति समान इकाई पर समान मुद्रा में होगा ।

### तालिका

क्र.सं	उप शीर्ष या मर्दे	शीर्ष टैरिफ	माल का विवरण	विनिर्दि- ष्टता	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9	10.	11	
1.		293628.00	विटामिन ई एसिटेट	96% ई	चीन जन.गण	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	22.64	कि.ग्रा.	अम.डा.
2.		293628.00	विटामिन ई एसिटेट	93% ई	चीन जन.गण	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	21.94	कि.ग्रा.	अम.डा.
3.		230990	विटामिन ई फीड ग्रेड या झाई पावडर	50% ई	चीन जन.गण	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	11.32	कि.ग्रा.	अम.डा.
4.		293628.00	विटामिन ई एसिटेट	96% ई	कोई देश	चीन जन.गण	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	22.64	कि.ग्रा.	अम.डा.
5.		293628.00	विटामिन ई एसिटेट	93% ई	कोई देश	चीन जन.गण	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	21.94	कि.ग्रा.	अम.डा.
6.		230990	विटामिन ई फीड ग्रेड या झाई पावडर	50% ई	कोई देश	चीन जन.गण	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	11.32	कि.ग्रा.	अम.डा.

यदि आयातित उत्पाद का सांद्रण उपर्युक्त तालिका में उल्लिखित सांद्रण से अलग सूचित किया जाता है तो पाटनरोधी शुल्क आनुपातिक आधार पर लगाया जाएगा।

47. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुँच मूल्य सीमा शुल्क, अधिनियम, 1962 के अधीन सीमा शुल्क विभाग द्वारा यथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के तहत लगाए गए अतिरिक्त सीमा शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के शुल्क शामिल होंगे।
48. उपर्युक्त के अध्यधीन प्राधिकारी दिनांक 2 दिसम्बर 2002 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।
49. इस आदेश के विरुद्ध कोई भी अपील इस अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क एवं स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

एल. वी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

### **MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**

**(Department of Commerce)**

**(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)**

#### **NOTIFICATION**

New Delhi, the 22nd August, 2003

#### **Final Findings**

**Subject : Anti-Dumping investigation concerning imports of Vitamin-E originating in or exported from the China PR**

No. 14/32/2002-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

#### **A. PROCEDURE:**

2. The procedure described below has been followed:

(i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s Merck Ltd, Mumbai on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Vitamin –E originating in and exported from China PR (hereinafter referred to as subject country).

(ii) The Authority notified the Embassy of subject country about the receipt of fully documented petition application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) The Authority issued a Public Notice dated 27<sup>th</sup> August 2002 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of Vitamin-E falling under Chapter heading 293628 and 230990 of Schedule I of the Customs Tariff Act. The Authority forwarded copy of the initiation notification, non confidential petition filed by the domestic industry and questionnaire proforma to known exporters, importers and embassy of subject country in India requesting them to advise the producers and exporters in their country to respond to the initiation notification in the prescribed proforma within the time limits prescribed.

(iv) Only M/s Zhejing Nhu company Ltd. China has responded to the Authority from among the exporters to whom Exporters Questionnaire had been sent. The Embassy of China PR in New Delhi was also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time; M/s. Zhejiang Medicine Company Ltd, Zhejiang, China PR has responded to the petition.

(v) The Authority issued a Preliminary Findings dated 2<sup>nd</sup> December 2002 published in the Gazette of India, Extraordinary, recommending imposition of Anti Dumping Duty – provisionally – pending further investigation.

(vii) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties who were requested to furnish their views, if any, on the preliminary findings within forty days of the date of the letter;

(vii) None of the users/ importers has responded the importer questionnaire except M/s CLFMA, Mumbai which is an Association of live stock industry.

(viii) The Authority also forwarded a copy of preliminary findings to the Embassy of China, New Delhi with a request that exporters and producers in their country may be advised to furnish their views on the preliminary findings.

(ix) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally during 17<sup>th</sup> April 2003. All parties presenting views orally were requested to file written submissions, of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any.

(x) Arguments raised by the interested parties before announcing the preliminary findings, which have been brought out in the preliminary findings notified have not been repeated herein for sake of brevity. However, the arguments raised by the interested parties are considered in Final Findings.

(xi) In accordance with Rule 16 of The Rule supra, the essential facts/ basis considered for these findings have been disclosed to known interested parties and comments received on the same have been considered in Final Findings.

(xii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by all interested parties.

(xiii) The Authority also conducted cost investigation and worked out optimum cost of production/ cost to make and sell in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles.

(xiv) The period of Investigation for the purpose of present investigation was from 1<sup>st</sup> January 2001 to 31<sup>st</sup> March 2002 (15 Months)

#### B. Product under Consideration and Like Article

##### 3. Submissions made by the domestic industry

The product under consideration is Vitamin-E, which is produced in the acetate form, and is then known as Vitamin-E Acetate. It can either be used as it is or further processed to obtain the different types, which includes, pure or IP grade (96% and above) and Animal Grade (Feed Grade or dry powder) Vitamin E 50%. In the Acetate grade, IP grade (96% and above) is used for pharmaceutical purposes and Vitamin - E (93%) grade is used for making feed grade. It is classified under the Customs subheading no. 2936.28 in the Custom Tariff Act, 1975. The petitioner has claimed that the Vitamin-E both Acetate as well as the feed grade which are manufactured by domestic industry are like article to the Vitamin-E imported from the subject country.

##### Examination by Authority

4. The submission made by the various interested parties have been examined and considered while arriving at these findings and wherever appropriate have been dealt. The product under consideration is Vitamin E, which is produced in the acetate form, and is then known as vitamin -E Acetate. It can either be used as it is or further processed to obtain the different types, which includes, pure or IP grade (96% and above) and Animal Grade (Feed Grade or dry powder) Vitamin E (50%). In the Acetate grade, IP grade (96% and above) is used for

pharmaceutical purposes and Vitamin E (93%) Grade is used for making feed grade. The Authority has accepted the submission of exporter that selling prices of Vitamin E (50%) feed grade and Vitamin E Acetate Grade (96% and 93%) are varied substantially primarily due to the cost components which gives rise to different level of purity. The Authority has accepted the exporter's submission to make a proper comparison on the basis of different purities. Thus, the Authority confirms that the product under consideration is Vitamin-E (both Acetate (96% and 93%) as well as feed grade (also known as (50%) dry powder grade) (hereinafter referred to as subject goods).

5. All types of Vitamin E-Acetate (96% and 93%) are classified in Chapter 293628 and Vitamin-E (50% dry powder) feed grade is classified in terms of 230990 as preparations of a kind used in animal feeding. The investigation is against the product under consideration irrespective of the classification under which it is imported. Customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.
6. Rule 2(d) of the Anti Dumping rule specifies that Like Article is an article, which is identical and alike in all respects to the product under investigation or in absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the articles under examination.
7. The Petitioner has claimed that the goods produced by them are like articles to the goods originating in or exported from subject country. No dispute has been raised on the definition of the product under consideration and like article by any interested party in the investigation. The Authority notes that Vitamin E (Acetate as well as feed grade or dry powder) produced by domestic industry has characteristics, which are similar to those of the Vitamin-E (Acetate as well as the feed grade or dry powder) imported from subject country. In view of the above, the Authority holds that Vitamin-E (Acetate as well as the feed grade) produced by the domestic industry and those being imported from the subject country are Like Articles within the meaning of the Anti Dumping Rules. In this regard the Authority confirms the provisional findings.

De Minimus Limits:

8. The Authority has examined the data of imports of the subject goods from the subject country as made available by DGCIS and IBIS (secondary source) for the POI. The data gathered from

these sources indicate that the import of subject goods from China PR during the POI is above de-minimus levels.

#### DOMESTIC INDUSTRY:

9. The petition has been filed by M/s. Merck Ltd. Mumbai. The petitioner is the sole producer of the subject goods in India. There are arguments that Merck Ltd is also importing the intermediates from China, which are much cheaper. CLFMA has further added that they do not know whether E-Merck, Germany has filed a similar petition on anti-dumping of Vitamin E in Europe. It is further stated that in the light of the above information, E-Merck (I) Ltd., Mumbai does not hold good petitioning to the Authority on anti-dumping duty on Vitamin-E.
10. The Authority has considered the submissions made by various interested parties. The Authority has determined that the Domestic industry and any of the exporters of the subject goods from the subject country are not related or affiliated within the meaning of Ant Dumping Rules. Also, the petitioner has not imported the subject goods from the subject country during the POI and is therefore not excluded from the definition of the Domestic Industry. The Authority has determined that the petitioner is a domestic industry in terms of Rule 2 (b) of the Anti Dumping Rules and the petitioner satisfies the criteria of standing to file the petition on behalf of the Domestic Industry in terms of Rule 5(3) (a) of the Rules supra. The Authority, therefore, confirms its provisional findings with respect to Domestic Industry standing.

#### Other Issues raised by M/s Zhejiang Medicine Co Ltd. (JMC) China PR

11. The exporter has represented that the examination by the Authority has serious procedural defects which are in breach of the customs tariff Act and the Indian anti dumping Regulations or IADR, as amended and its obligation under the WTO. They have further represented that they had submitted to the Authority full and complete information as requested in the standard form of questionnaire within the prescribed time-limit. They have submitted that the authority did not conduct an inquiry or procedure to obtain clarification on any data that was unclear to it nor by means of any communication. They also submit that

investigation conducted by the authority based on a flawed procedure has led to provisional anti dumping duty being imposed without providing any legitimate right or opportunity to JMC to safeguard its interests in the proceedings. They further submit that the authority has blatantly rejected the request of JMC for granting market economy status to China. They have further stated that till date, no procedures and no detailed guidelines/instructions have ever been given by the authority, which constitute a breach of WTO obligations. They have further represented that the petitioner's major production of the product allegedly like the alleged dumped article is destined for captive consumption; which commercially speaking shields any competition in an open market. It is further stated that the petitioner imported some key raw materials in order to produce the product allegedly like the alleged dumped article. It has also a different production process from the one used by ZMC.

12. It is submitted that the petitioner must have assumed high import customs duties. Further, the above stated two (or even any other type) imported raw materials, Isophytol and Trimethylhydroquinone, make up about 60% and 20% respectively of the manufacturing cost. It is, therefore, seriously disputed and questionable if the petitioner was truly suffering from alleged injurious dumping, as it is clear that it cannot compete in a real market economy market due to its production structure that resulted in high cost.
13. It is incorrect for the Designated Authority to state that Trimethylphenol and Isophytol are major raw materials. This statement by itself is not sufficient since it depends upon the stage of the production process from which the product allegedly similar to the alleged dumped article is being manufactured. It is well known and asserted that there are several additional raw material used in the production process. From a technical point of view, the very starting point is 3-Cresol and Isovaleraldehyde. If the petitioner contends and as stated by the Designated Authority that Trimethylphenol and Isophytol are major materials then, this means that the petitioner's production process has indeed started from "compounding process" – which itself explains that the petitioner counted on purchasing/importing raw materials before the stage of Isovaleraldehyde and Isophytol. In this context, if the petitioner claims to have suffered from injurious dumping, it is submitted that the production process, directly influenced by the international prices of raw materials and the high import customs duties, caused the petitioner to be

in difficulty for the redressal of which, the remedy does not lie with the Designated Authority.

13A Submissions made by ZMC, China PR after the disclosure statement:

- (i) As DGAD is aware that ZMC has been acting to the best of their ability to cooperate with the Indian investigating authority, supplying all the requisite information, documentation and clarifications, impeding no investigation conducted by the Indian investigating authority, observing each procedural requirements during the course of the investigation. However, when examining the Disclosure Statement, in particular at paragraph 2.4, 2.5 and 2.6, ZMC is appalled to read statements of "non cooperation" alleged by the Indian investigating authority, and extremely disappointed at the conclusion made thereby. ZMC's right to a fair hearing was not procedurally safeguarded.
- (ii) Admittedly, written rules concerning market economy treatment were enacted by the Indian investigating authority, however, those rules are simply served as "criteria", which are not accompanied by a clear set of procedural rules, such as to what extent, on what basis, by which supporting documents a company shall present to the Indian authority in order to meet with the "criteria" is unclear. This is precisely what ZMC stated to the Indian investigating authority in its comments on the provisional findings.
- (iii) In the current proceeding, ZMC submits that the Indian investigating authority has failed to observe the procedural requirements, in particular on how to meaningfully guide and properly instruct ZMC to go through the test of "criteria". As a result, ZMC had no legitimate legal expectation and no legal certainty.
- (iv) ZMC has noted that the Disclosure Statement indicated that ZMC had not responded "within stipulated time period" Further, If the Indian investigating authority dispatched further questions in relation to the market economy status, neither counsel nor ZMC received such questions, despite of the assertion made by the Indian investigating authority. Unfortunately, ZMC including its 3 nominated counsel did not receive such claimed questions by the Indian investigating authority. Regarding another serious defect in communication about the agreement to on-site verification, counsel recalled that the Indian investigating authority requested for verification orally, and ZMC also replied orally to willingly agree to have on-site verification. In this regard,

except for two sides' oral communication, no written request and confirmation was eventually followed.

Submissions by Association of Livestock Industry (CLFMA of India)

14. The petitioner i.e. Merck Ltd, Mumbai mentioned during the hearing that they have currently suspended the production of Vitamin E 50 powder. This may lead to acute shortage of this vital ingredient. This may lead to substandard products being used by the industry in order to make quality product available. We strongly recommend that anti-dumping duty should not be imposed since petitioner enjoys hardly 22-25% of market share. They have also submitted that M/s. E Merck is manufacturing Vitamin-E in India and the company has its headquarter in Germany. The company is manufacturing Vitamin-E in 30 years old plant, which was initially exporting to the then USSR. Vitamin E was under the DPCO, but the same was sold by M/s. E. Merck below DPCO price for number of years. To manufacture vitamin E intermediate are required, which are being imported from Europe. The same intermediates are also manufactured by the People's Republic of China. It is learnt that E- Merck is also importing the intermediates from China

Submissions made by Domestic Industry.

15. The percentage of captive consumption to gross production increased from 35% (2000) to 45% (2002). It may be noted that the percentage increased due to dumping of the product in the country which lead to decline the sales of the domestic industry (and thus higher percentage of captive consumption). This further substantiates material injury to the domestic industry..
16. The share of import raw materials in raw materials consumed is more than 90%. Please note that there are multiple sources for these raw materials. We request the Designated Authority to kindly direct the Chinese exporter to disclose (a) the associated investments in producing these raw materials (Isophytol and Trimethyl Phenol); (b) whether the exporter is producing both these materials (Isophytol and Trimethyl Phenol captively); (c) whether the exporter is selling these raw materials in addition to captive consumption, and if so, whether the exporter has

considered cost of production for these raw materials or selling price in its cost of production.

17. The process adopted by the petitioner is confidential and cannot be disclosed. However, it is confirmed that the petitioner starts its production process from Isophytol and Trimethylol Phenol. Petitioner has some exports of the subject goods, which varied from 0% to less than 5%. The Domestic industry has further submitted the data with regards to gross production, sales of Acetate and feed grade, export sales, captive consumption and its proportion to the total sales and share of domestic sales to total utilization.
18. The Domestic industry has represented that Vitamin-E is first produced in higher concentration and the sold in lower concentration (also called feed grade). Concentration of the subject goods can be altered to suit customer's requirement. The domestic industry adds that it is quite feasible to consume Vitamin-E 40% or 45% concentration in case 50% is not available. Therefore, should the duty be restricted to 50% feed grade, it would easily result in the circumvention of duties. They have referred to the final findings notified by the Authority in various cases where pro rata duties have been recommended in case the concentration of the imported material is reported different then the concentration for which the duties have been recommended. They have requested the Authority to confirm the duties on all forms of vitamin-E and in case concentration of the imported product is reported different then the concentration for which the Anti Dumping duty has been determined, Anti Dumping duty on pro rata basis would apply.

Submissions made by the Domestic Industry after the Disclosure statement

- (18A) The arguments advanced by the sole responding exporter with regard to rejection of information provided are worthy of rejection, as the exporter has failed to establish that it deserve market economy treatment. The various arguments advanced by the exporter in this regard are also are also worthy of rejection. Petitioner earlier filed detailed submissions in this regard and the same are relied upon.
- (ii) Petitioner has already provided sufficient information (on confidential and non-confidential basis) which shows that the domestic industry has suffered material injury due to dumping of subject goods from subject country. We rely upon the same. Petitioner earlier provided information showing therein the impact of high cost of raw materials in the earlier years on the profitability of the Company. It would be seen from that

information that the Company would have made significant profits in the past, had the raw materials been sourced at the prices at which it is being sourced now. The injury to the domestic industry in earlier years was due to high price of raw materials and dumped imports. While the domestic industry first took concrete steps to mitigate its injury by taking steps to reduce the raw materials costs and the same yielded positive impact on the profitability, the performance got worsened once again due to dumping subsequently, which is quite prominent within the investigation period itself. In other words, had the Company continued to source the raw materials in the investigation period at same price as it had been earlier, the losses to the domestic industry would have further increased. At the same time, had the injury to the domestic industry not worsened due to dumping, the performance of the domestic industry would have been quite satisfactory.

- (iii) Details of captive consumption of the product for the petitioner has been provided earlier. It was shown that captive consumption forms a very significant part of the petitioner's production and sales. Therefore, any adverse impact on the domestic market would very adversely impact the captive consumption also. As regards the prices of the end products, it is submitted that the same is not relevant, as the Company has transferred the cost of captively sourced input on the basis of DPCO price of the product.
- (iv) With regard to the argument that the Company has substantial captive consumption and, therefore, domestic industry could not have suffered material injury, it is submitted that while the same is true, it may be seen that the Company has substantial merchant sales also.
- (v) With regard to the argument that the petitioner is importing the principal raw materials, it is submitted that the issue is irrelevant. Raw materials and finished goods have to be distinguished for the present purpose. In fact, there are several cases completed by the Designated Authority wherein the principal raw material is imported. For instance, acrylic fibre (acrylonitrile), NBR (acrylonitrile and butadiene), metcoke (in fact, the justification given for "ability to produce" by the domestic industry was that it can produce the goods by importing coal) are few examples wherein the domestic industry imports the principal raw material. Petitioner also wish to refer to and rely upon final findings notified by the Designated Authority in the following cases, wherein it is

found that the duties have not been restricted to particular concentration imported. Either the duties have been levied on the "product under investigation" or prorata duties have been recommended in case the concentration of the imported material is reported different than the concentration for which duties were determined.

1. Choline chloride (prorata duties);
  2. Zinc oxide (prorata duties);
- (vi) In view of the above, petitioner requests that the preliminary findings may kindly be confirmed with the modification that the anti dumping duty is on all forms of Vitamin-E and in case concentration of imported product is reported different than the concentration for which anti dumping duty has been determined, anti dumping duty on prorata basis would apply.

#### Submission by M/s Soham organics Ltd, Nashik

19. They represent that they are the first Indian company manufacturing the subject goods and they are most interested party as far as imposition of the Anti Duty on the product is concerned. They further represented that though they were not the manufacturers during the POI, now they have commenced the production and are most worried about the material and cost injury to be faced even after the proposed anti dumping duty. They have represented that the total capacity of the Indian consumers of Vitamin -E is not more than the total manufacturing capacity of the Indian manufacturers. They have requested the Authority to review the rates of the Anti Dumping duty on the China PR and other countries so that it would remove the injury caused to the domestic industry, displace the demand of the domestically produced Vitamin-E and help to maintain the availability of the wider choice in the market.

#### Examination by the Authority

20. (i) It has been argued by the exporter that complete information was provided by the exporter and still the same has been rejected and the exporter is being treated as Non Market Economy. The Authority notes that the question of accepting questionnaire response arises when the exporter submits the response in the form and manner as asked in the exporters questionnaire and also satisfies the criteria laid down under

para "8" of Annexure 1 to the Rules. The said para and the conditions laid down therein are self-explanatory. It would therefore not be appropriate to argue that the conditions for granting MET (Market Economy Treatment) were not specified.

- (ii) It is incorrect that no procedure or detailed guideline/ instruction have been prescribed with regard to granting of a MET (Market economy treatment). The obligation under the rules is to specify the criteria which the exporter must fulfill in order to seek MET. In addition to the specific criteria prescribed under the rules , the Authority recalls that subsequent to the public hearing, specific information was sought from the exporter with regards to the rebutting presumptions laid down under 8(3) of the Anti Dumping Rules with regards to market economy treatment. The Authority had dispatched the letter dated 6<sup>th</sup> June 2003 to the legal counsel for the exporter in Delhi vide speed post bearing file number 14/32/2002 and the exporter was asked to respond to the letter within 15 days. Moreover the receipt of the said letter was reconfirmed with the legal counsel orally. Further the Authority had specifically asked the exporter to submit the response with regards to the deficiencies pointed out in the preliminary findings and had also asked to confirm their willingness for the verification visit . It is also mentioned that the correspondence was made through their legal counsel in Delhi as the company had appointed them to receive all communications from the authority, to make submissions on their behalf and to appear for and on their behalf. It is also confirmed that their legal counsel in Delhi had made previous correspondences with the Authority on behalf of the exporter and they also have appeared in the public hearing before the Authority. A copy of the said letter written to the exporter is available in the public file and the copy of the correspondence made with the legal counsel including the dispatch details are also available in the public file. The Authority, therefore is constrained to reject the submissions made by the exporter with regards to the non-receipt of the letter dated 6<sup>th</sup> June 2003.
- (iii) Averment of ZMC that petitioner's major production is destined for captive consumption is incorrect. It is seen that the captive consumption of the petitioner and Merchant sales of the petitioner constitute two significant markets for the petitioner and petitioner is fully entitled to seek redressal for the injury caused in the merchant market, particularly when such merchant market constitute a major proportion of total production and, more importantly, petitioner satisfies the requirement of standing under the Rules. From the information

submitted on the captive sales and merchant sales, it does not appear that the company is shifting from merchant sales to captive consumption.

- (iv) As regards difference in starting raw materials and incidence and implications of high customs duties, the Authority notes that the industry is required to be examined under existing circumstances only.
- (v) CLFMA has argued that the petitioner has currently suspended production of Vitamin E 50 powder and the same may lead to shortage of this vital invariant. The Authority notes that this perhaps substantiates the claim of the domestic industry with regards to injury.

#### NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN:

21. Under Section 9A(1) (c) of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:
  - (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
  - (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either: -
    - (a) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory to an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
    - (b) The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no

comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

Submission by Exporter M/s. ZMC, China PR

22. The exporter has submitted that preliminary findings simply rejected all the information supplied by ZMC and the authority has determined normal value for ZMC on the basis of facts available. They have submitted that facts available contention used by the Authority in determining the normal value is an improper invocation of the said Rule. They have requested the Authority to rectify the error. They have also submitted that the Authority has failed to respect the IADR as clause 7 of the Annexure I of the IADR provides the order in which options for determining the normal value may be exercised. They have submitted that priority should be given to the one appearing first and if this proves not applicable, then the second option should be considered. The Authority has perhaps adopted the most convenient way, while completing brushing aside the provisions of IADR and determining the normal value on the basis of estimated cost of production in China plus SGA expenses. They have requested for a full disclosure on the calculation of dumping margin, transaction-by-transaction with all necessary data may be provided to the ZMC.

Submissions made by the domestic industry

23. The Domestic industry has submitted that since the investigations have been initiated in accordance with Para 7 and 8 of the Annexure I, the response of the exporter can be admitted only if the company can establish that it was operating under market economy parameter as laid down under 8(3) of the Annexure-1 of the Anti Dumping rules

It is evident that response of a company can be admitted only if provides information and evidence to establish that it operated under market economy principles on the following 15 parameters:-

- A. Whether the followings are in response to market signals and without significant State Interference

1. Selling Price

2. Costs
3. Inputs – Raw Materials
4. Technology
5. Labor
6. Output – production
7. Sales – volumes
8. Investments

**B. Whether followings are applicable to such company**

9. Depreciation of assets
10. Write offs
11. Barter trade
12. Payment via compensation of debts
13. Bankruptcy law
14. Property laws

**C. Whether following is factually so in respect of the company**

Exchange conversions at market rate – both for purchases and sales

In the instant case, the company can not be granted at the threshold itself for the reason that majority shareholders in the company are from the State. We are enclosing herewith relevant extracts from the response filed by the company. It would be seen that a number of shareholders are having State entity. Such being the case, the company can not establish that it is operating without significant State Interference. Furthermore, there is no evidence in the information filed that the factors of production substantially reflect market values.

Petitioner submits that Rule 8 puts the obligation and onus on the exporter concerned. However, in the instant case, the exporter has failed to establish itself market economy company. Such being the case, the normal value in case of the exporter has to be determined in accordance with Rule 7. Petitioner had considered normal value based on price actually paid in India, duly adjusted for profit margin. The Authority has considered normal value on the basis of constructed cost of production in the country of origin plus selling administrative and general expenses and a

reasonable amount of profit after making reasonable adjustments in the preliminary findings.

In view of the above, petitioner requests the Designated Authority to confirm the preliminary finding in this regard.

Examination by the Authority

24. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). Only one of the exporters from China PR i.e. M/s. Zhejiang Medicine Co.(JMC) Ltd., China PR., responded to the Authority with replies to all the appendices mentioned in the Exporter's Questionnaire. The authority recalls that it had made an observation on page 36 of the findings that they had not given an account of sales price structure for exports to India in Appendix 4, they have not given an account of inland insurance, storage, handling (charges after ex-factory and before f.o.b.), and shipping charges duty, clearance and handling charges after f.o.b. As per appendix 7 of the exporters' questionnaire, they have not given the licensed capacity for other products manufactured in the plant. As regards factory cost and profit of exports to India, they have not mentioned about the rate at which the utilities have been consumed for the production of subject goods. As the company appears to be a multi product company, full information regarding basis of allocation of costs for manufacture of subject goods needs to be explained which is required as per general information part D. As the domestic sales should be in the ordinary course of trade i.e. these should be a price to recover the cost of production and selling, general and administrative expenses. Though they have submitted the replies to the appendices 8,9 and 10, they have not commented upon direct and indirect subsidy given by the Government, if any, on production, procurement, sale and transportation of raw material, utilities, finances, etc. They have also not submitted the Profit and Loss account and balance sheet for the complete POI.
25. The Exporter had represented vide letter dated January 14<sup>th</sup> 2003 in their comments to the preliminary findings about the procedural defects in the initiation, burden of checking the information and requesting supporting documentation, market economy status, high reliance of the imports by the petitioner at high cost, determination of normal value in breach of Indian Anti Dumping Rules and no clear evidence of the injury to the domestic industry (described in detail as per the other issues in

the Annexure 1). However, the exporter did not reply back to the specific query as regards to the observations made by the Authority in the preliminary findings with regards to the replied to the exporters questionnaire and also about the market economy status. Following the public hearing on 17<sup>th</sup> April 2003, the exporter did not submit the written submissions in time and they have not submitted any rejoinder too. Further, a letter was sent to the exporter requesting them to submit to the specific information as mentioned in the sub-para 3 of the para 8 of the Annexure 1 of the Anti-Dumping Rules to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether

- (a) the decisions of concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values ;
- (b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- (c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms; and
- (d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate;

The exporter was requested to furnish the following data.

- (i) How the raw materials and other relevant inputs for manufacturing the product concerned are procured (short or long term contracts, spot market, number of suppliers for the various raw materials, purchased locally or abroad etc.).
- (ii) For each item of raw material, information about the name and address of the supplier, whether the supplier is a private person, a company, the State or a local/regional authority :
- if it is a private person, whether this person has Chinese nationality or any other nationality;

- if it is a company, whether it is a Chinese company, a foreign-owned company or a joint-venture with a foreign-owned company;
- if it is a Chinese company, whether it is a privately owned company, a State-owned company or a company owned by local/regional authorities. If it is a company part-owned by the State or local/regional authorities, specify to what extent State or local/regional authorities are involved;
- if it is a local/regional etc. authority, details to be given.

(iii) For each item of utility i.e. coal, electricity, water and oil, the names/addresses of the suppliers may be given. Whether these utilities are charged at normal rates or whether any special or subsidized rate is charged. What are the rates charged during the POI for each of the utility?

(iv) Whether there are any restrictions or conditions, either direct or indirect, on imports of raw materials used by the producer. If so, these restrictions or conditions may be described.

(v) It may be described how labour is organized for production purposes. How many skilled workers, unskilled workers, managers etc. are employed? What is the average wage paid to each of these categories in the POI ?

(vi) How company employees are remunerated (i.e. indicating in detail all elements of remuneration including salary, overtime pay, company car, holiday allowance etc.). What is the frequency of the remuneration? Which legal entity is the final payer? Do the employees of the company or their families benefit from other facilities such as housing, medical care, pension, education etc.? It may be specified who pays for these facilities. If the company employs foreign staff, and if so to mention separately where the final payer is located.

(vii) Whether any local / regional authority or State is involved in setting prices / quantities. Provide a copy of the documents (together with an English translation) in which those involvements are set out and indicate the relevant provisions.

(viii) Which accounting documentation has to be registered for official purposes each year? Which authorities are involved in the official registration of these documents?

(ix) The methods of depreciation and amortisation used for the

main fixed and intangible assets needs to be explained. The acquisition value and the current book value may be specified. It may be explained in each case how the asset was obtained (e.g. bought on the open market, transferred to the company by a shareholder, given for free or at a discount by the State or a third company). If the valuation of the above-mentioned assets has been changed during the last 10 years it may be explained on what basis and to give the reasons for the change in valuation. The impact on the current book value may also be given.

- (x) List of all facilities used for the production and/or commercial purposes that are not owned by the company (land, buildings and machines). The contracts for lease or rent to be furnished.
- (xi) A list of current loans held by the company as at 31<sup>st</sup> March 2002 may be provided giving details of the amounts, repayment instalments and interest rates. It may be explained whether the company benefits from special loan or subsidy schemes (e.g. preferential interest rates and extended payback periods, subsidized energy supply etc.).
- (xii) It may be explained how foreign exchange rate(s) used for purchase of inputs, conversion of the proceeds of export sales and repatriation of profits are set? Is there only one rate, which can be used? Explain if there are any limits applicable to the company for the use/conversion of foreign currencies. If the company has a foreign exchange account, the approval of the application (together with an English translation) by the relevant authority may be submitted.
- (xiii) Has the company been involved in barter-trade or counter-trade at any time in the last five years involving the exchange of goods or commodities for (foreign) equipment, services or commodities? Provide details and explain the accounting methods used.
- (xiv) Explain whether the company has been involved in compensation trade (also known as product buy-back) at any time in the past five years whereby a (foreign) company provides machinery and equipment for which it receives payment-in-kind, usually in the form of goods produced. Explain if such payments were structured as loans or as instalment sales. Explain the accounting methods used.

- (xv) The profit distribution policy of the company for the last three years may be specified.
26. The exporter was requested to submit the reply on the above-mentioned points within a stipulated period. They were also requested to submit the replies with regard to the observations made in the preliminary findings on page 35-37 at para 10 of the Preliminary Findings dated December 2, 2002. They were also requested to confirm their willingness with regards to the on the spot verification of the data submitted by them to the Authority in this investigation. The Authority did not receive any replies to the letter till date.
27. As communicated to the known exporters and to the Embassy of China PR the Authority proposed to examine the claim of the petitioner in the light of Para 7 and 8 of the Annexure I of the Anti dumping Rules as amended. The Authority notes that the exporter has not submitted complete information as indicated in the above-mentioned paragraph, the test of domestic sales in the ordinary course of trade is not possible in the given circumstances and a determination of normal value as per provisions contained in Section 9A(i) c (i) & (ii) read with rule 2 (i) and (ii) of the Annexure I of the Anti dumping rules can not be made. The Authority also notes that the exporter has not furnished necessary information/sufficient evidence as mentioned in the sub paragraph (3) of the paragraph 8 of Annexure I of Anti Dumping Rules to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether;  
“(i) – (iv) the decision of concerned firms ..... the exchange rate conversions are carried out at the market rate”
28. The Authority notes that in the absence of information as mentioned above, determination of normal value as per provisions contained in Section 9A(i) c (i) & (ii) read with rule 2 (i) and (ii) of the Annexure I of the Anti dumping rules can not be made. The Authority is therefore unable to apply the principles set out in the paragraph 1 to 6 and is constrained to proceed as per the facts available.
29. Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8). Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods in China PR.

30. The Normal value determined by the Authority for M/s. Zhejiang Medicine Co. Ltd., China PR. comes to US\$ \*\*\*\* per Kg and US\$ \*\*\*\* per Kg for Vitamin-E Acetate grade 96% and 93% respectively.

#### EXPORT PRICE:

31. The Authority has taken into account the DGCI&S data for all the transactions during the POI for the Acetate Grade. As regards Feed Grade, the Authority has relied on the data furnished from secondary sources i.e. IBIS, Mumbai for calculating the quantum of exports and their value from China PR to India as no transaction wise data was made available by the DGCI&S. However the data submitted by the exporter corresponds with the information culled out from the IBIS (Secondary sources) data, which are based on transaction wise statements of imports from the subject country. The Authority notes that 53931 Kgs of Vitamin E-Acetate (96% and above), 9040 kgs. of Vitamin-E (93%) Acetate Grade and 24750 kgs. of Vitamin E – Feed Grade (50%) have been exported to India during the POI from China PR for Rs. 33645825, 4147975 and Rs. 702990 and the weighted average export price per kgs. of exports for the grades mentioned above come to US \$ 13.17, US \$ 9.69, and US\$ 6.00. However, the Authority notes that M/s. Zhejiang Medicine Co. Ltd., China PR has exported \*\*\*\* kg of Vitamin E-Acetate (96%) and \*\*\*\* kg of Vitamin E Acetate (93%) to India during the POI for a value of US\$ \*\*\*\* and US \$ \*\*\*\* with the unit price of US \$ \*\*\*\* per kg and US \$ \*\*\*\* per kg respectively. The Authority has made adjustments towards inland freight and insurance and overseas freight and insurance as suggested by the exporter. Discounts mentioned in the Annexure have also been accepted by the Authority for arriving at the export price at the Ex factory level. After adjustments, the net export price at ex factory level comes to US \$ \*\*\*\*/kg for Vitamin-E Acetate Grade (96% and above) and US \$ \*\*\*\*/Kg (For Vitamin-E Acetate 93% Grade);

#### DUMPING MARGIN:

32. The principles governing the determination of normal value, export price and the dumping margin as laid down in the Custom Tariff Act and the Anti Dumping Rules are elaborated in Annexure I to the Rules. The dumping margin for exports of the subject goods from M/s. Zhejiang Medicine Co. Ltd. China PR is assessed by the Authority at US \*\*\*\*/kg or 78.8% of the export Price for Vitamin E - Acetate Grade (96% and above) and US

\$\*\*\*\*/kg or 139% of the export price for Vitamin-E Acetate Grade (93%).

Other Exporters from China PR

33. The Authority provided opportunity to the known exporters from China PR to furnish information relevant to the investigations and offer comments, if any, in accordance with the Section cited above. The Authority wrote to the Embassy of China in India also. However, no other exporters from China have responded to the Authority's request for information. The claim made by the petitioner with regard to the determination of normal value has also not been disputed by the other interested party (ies). Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8). Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods in China PR.
34. The normal value for China P.R. based on the best information available works out to US\$ \*\*\*\* per Kg for Vitamin-E Acetate (96% and above), US \$ \*\*\*\* per kg for Vitamin-E Acetate (93%) and US \$ \*\*\*\* per Kg for Vitamin-E dry powder (50% feed grade). The Export price at the Ex factory level has been calculated by taking the weighted average export price of the from the subject goods from China PR during POI. The net ex-factory export price worked out on these parameters and allowing adjustments as made in the case of cooperating exporter works out to US\$ \*\*\*\* per Kg, for Vitamin E Acetate Grade (96% and above), and US \$ \*\*\*\* per kg for Vitamin E Acetate Grade (93%). The net export price for Non-cooperative exporters for feed grade has been as weighted average export price as per transaction wise data made available through IBIS, Mumbai. The dumping margin for exports of the subject goods from China PR is assessed by the Authority at US \$ \*\*\*\*/kg or 86.6% of the export Price for Vitamin E - Acetate Grade (96% and above), US \$ \*\*\*\*/kg for Vitamin-E Acetate Grade (93%) or 183% of the export price and US \$ \*\*\*\*/kg or 95.9% of the export price for Vitamin E (50%) Feed Grade respectively.

**Dumping Margin:**

Dumping Margin Calculation for Vitamin-E for imports from China PR (US\$)						
	Description		NV	EP	DM	DM%
Zhejiang Medicine Co. Ltd, China PR	Vit -E Acetate	96%	****	****	****	78.82
	Vit -E Acetate	93%	****	****	****	139.31
Other Exporters, China PR	Vit-E Acetate	96%	****	****	****	86.7%
	Vit -E Acetate	93%	****	****	****	183.8%
	Vit-E Dry Powder	50%	****	****	****	95.9%

**35. INJURY:**

Under Rule 11 supra, Annexure –II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, ".... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

36. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra.

**Views of the Petitioners:**

37. Vitamin-E is covered under Drug Price Control Order. Thus, the prices of the product are controlled by the Govt. of India. Such

being the case, the petitioner has no option but to sell its goods at the prices notified by the Govt. of India.

1. Petitioner makes a number of products using Vitamin-E. Petitioner competes with other producers of these goods. While the petitioner is forced to transfer its goods at its higher cost of production, the other producers are getting an undue advantage from such unfairly prices imports. Thus, the petitioner is suffering not only on its merchant sales but also on its captive consumption.
2. Market for Vitamin-E where the imports are reported in huge volumes can be divided in two parts – Acetate Grade and Feed Grade. Cost and price of Feed Grade is almost half of Acetate Grade, as it contain 50% Vitamin-E and some additives in small value.
3. Performance of the domestic industry has very materially changed in the proposed investigation period (January 2001 – March 2002). Petitioner requests that the injury analysis may kindly be carried out on quarter-to-quarter or month-to-month basis in the investigation period.
4. Imports from China have increased in absolute terms and the share of China PR in total imports of Vitamin E has increased significantly. As a direct consequence, the share of domestic industry has declined significantly.
5. The decline in exports prices has directly resulted in decline of landed value of imports. Analysis of quarterly trends particular in feed grade further shows that the share of the domestic industry declined significantly until such time the domestic industry reduced its prices.
6. Though the overall production and capacity utilization of the domestic industry in respect of acetate grade increased up to 2001, the quarter-wise information shows that the production declined during the POI.
7. Since the company has substantial captive consumption, the impact of dumping is not very visible in terms of loss of production of acetate grade. The petitioner adds that their merchant sales volume have declined significantly during the POI and is faced with increasing stocks of the subject goods in spite of significant captive consumption and reduction in production.
8. In the feed grade, the petitioner has reduced the prices significantly. The petitioner adds that within the proposed investigation period, till such time, the petitioner was not reducing its selling prices, its volumes declined. However, reduction in the selling prices resulted in some increase in the sales volumes, which, however, remained sub-optimal.

10. In acetate grade, the petitioner has been able to improve its profitability due to the cost cutting measures taken by the petitioner. At the same time, the petitioner had to bear the burnt of not reducing the prices in this segment in terms of significant loss of volumes. In feed grade, the profitability of the petitioner has suffered very adversely. The petitioner, which was earlier making profits, has turned into severely losses.

Subsequent to the public hearing, they have submitted that

38. Subsequent to the preliminary findings and public hearing, they submitted that they had already provided sufficient information (on confidential and non confidential basis) which shows that the domestic industry has suffered material injury due to dumping of subject goods from subject country. Following parameters shows the injury to the domestic industry.
1. Imports from China have increased in absolute terms. The increase is more prominent in case the investigation period is analyzed on quarter-to-quarter basis;
  2. Share of China in total imports of Vitamin-E has increased significantly;
  3. Share of China in demand of Vitamin-E has increased significantly. As a direct consequence, share of domestic industry has declined significantly;
  4. Export prices from China declined significantly.
  5. The decline in export price has directly resulted in decline in landed value of imports;
  6. Analysis of quarterly trends (particularly in Feed Grade) would further show that the share of the domestic industry declined significantly until such time the domestic industry reduced its prices. Once domestic industry reduced its prices, sales volumes increased again (which were still sub-optimal).

It is evident that the imports from China are clearly showing adverse volume effect on the domestic industry.

Submissions made by the exporter M/s. ZMC Ltd., China PR

39. The exporter has requested the authority to disclose meaningful information with regard to percentage of sales on an open market of 96%, 93% and 50%, the percentage of these grades in the petitioner's turnover, evaluation of commercial activities exposed to the open market and an export trend over the last 10 years. They have further requested the authority to make a separate analysis in detail concerning the cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investment, productivity, capacity utilization, return on investment and profitability. They have further contended that there is no established evidence to prove that the petitioner is suffering from any real injury. They have further represented that the authority has failed to present analysis and issue of causal link. They have submitted that it is the investigating authority obligation to evaluate whether factors other than the alleged import of the allegedly dumped article are actual responsible for the injury.

#### EXAMINATION BY THE AUTHORITY

40. Analysis of Injury to the domestic industry has been done on the basis of the information available on record and the verification done by the officials of Directorate of Anti-Dumping & Allied Duties. The following parameters have been analyzed for the purpose of assessment of injury to the domestic industry

(i) Quantum of Imports:

To ascertain the quantum of imports, the Authority has considered the import statistics of the subject goods made available by DGCI&S, Calcutta for the POI and secondary information sources namely IBIS, Mumbai by taking transaction wise analysis of imports from the subject country and country other than China PR. The Authority has also examined the export statistics given by cooperating exporters from China PR and the secondary sources information (transaction wise information from IBIS, Mumbai) made available by the petitioner for Vitamin-E (Both for Acetate as well as Feed Grade). After examining this data, the Authority notes that the volumes shown by secondary sources data and the exporter's data broadly corresponds during the POI and previous years.

The domestic industry has claimed that imports from China PR have increased in absolute terms and their share has also increased significantly. The Authority has examined the import statistics during the POI and two years prior to it for both acetate and feed grade and conclude that there has been a rapid increase

of imports from China PR in absolute terms and increase is more prominent in case the quantum of imports are analyzed from quarter to quarter basis. The Authority observes that imports have increased more than 300% during the POI over previous year in Acetate grade and 900% in Feed grade. The imports during first quarter (Q1, 2002) from subject country is more than 60% and 900% from Q1 2001 for Acetate grade and feed grade respectively. Thus, the authority concludes that there has been a very significant increase in imports from China PR for the subject goods during the POI as compared to the previous years and also during the POI when analyzed quarter wise. As compared to the base year, the imports during the POI represent an increase of 467% while for other countries; it has increased by 350%. The Authority concludes that the imports from the subject countries have increased significantly in absolute terms as compared to previous years and also within the POI when compared quarter wise.

#### Absolute increase in Quantum of Imports from China PR

	Unit	1998	1999	2000	POI Annul
Acetate	kg	0	2000	15300	50376.8
Feed	kg	0	13000	2000	19800
Total China	kg	0	15000	17300	70176.8
Other Coun	kg	18739	115112	40255	66342
Total Imp	kg	18739	130112	57555	136518.8

Quarter Wise Information relating to Imports (Absolute Values in kg) For POI					
Total China		Q12001	Q2	Q3	Q4
Total China	Kg	11000	9750	16273	32998
Others	Kg	5895	14773	18195	32710
Total Imports	Kg	16895	24523	34468	65708
					29055

#### (ii) Market share of Imports:

The Authority observes that the share of China PR in the total imports of Vitamin E has increased by 70% over the previous year and has a market share of 51% during the POI while imports from the other countries have declined from 69% in the previous year to

48% during the POI taking the import during the base year (1998) as 100.

Market Share of Imports from China PR in Total Imports (%)

Market share in Imports		98	99	2000	POI Ann
China	%	0	11.53	30.06	51.40
Other Countries	%	100	88.47	69.94	48.60
Total	%	100	100.00	100.00	100.00

Market Share in Total Imports during POI Q-Q(%)				
	Q1 2001	Q2	Q3	Q4
China	65.11	39.76	47.21	50.22
Others	34.89	60.24	52.79	49.78
Total	100	100	100	100

(iii) Share of imports from subject country as a proportion to demand.

The Authority has calculated the total demand in the country by adding the total imports to the sales of the domestic industry of the product under consideration. The Authority notes that the share of China PR in total demand of the subject goods has increased from 5.46% during year 1999 (Nil import for base year 1998) to 22% during the POI Annualized while the share of other imports has increased marginally from 19.7% to 21.6%. The share of the domestic industry in the total demand has decreased from 87% during 1998 to 55% during POI annualized. Thus, the Authority concludes that there has been a significant rise in the market share of imports of the subject countries as a share of total demand and it has increased significantly during the POI as compared to previous years.

Market Share of Imports in total Demand (Absolute and Percentage share)

Demand	Unit	1998	1999	2000	POI (Ann)
Imp China	Kg	0	15000	17300	70176.8
Others	Kg	18739	115112	40255	66342

Total Imp	Kg	18739	130112	57555	136518.8
Demand	Kg	146695	274902	203669	306439.8

Share in Demand	1998	1999	2000	POI
China	0	5.46	8.49	22.90
Others	12.77	41.87	19.76	21.65
Total Imports	12.77	47.33	28.26	44.55
Domestic Industry	87.23	52.67	71.74	55.45

From the above data, the Authority concludes that share of the domestic industry has declined during the POI as compared to previous years in the total domestic market. The Authority further concludes that there has been a significant rise in the market share of imports of the subject countries as a share of total demand and it has increased significantly during the POI as compared to previous years.

#### (iv) Natural and potential decline in sales:

For both the grades i.e. Acetate and Feed Grade, sales volume shows continuous improvement till Q2 2001. However, subsequent to Q2 to 2001, sales volume shows significant decline during the POI. At the same time, import shows increase from Q3 2001. The Authority notes that sales volume shows an increasing trend from the base year to Q2 and after that it shows declining trend during the later quarters of the POI

#### (v) Production, Sales Volume, Capacity Utilization:

The authority notes that though the overall production and capacity utilization of the domestic industry in respect of Acetate Grade has increased up to 2001, a Quarter-wise information suggests that the production and sales volume during the POI has decreased during the POI though the sales volume of the petitioner shows a marginal decline during POI annualized as compared to the year 2000. With regard to Feed Grade there has been a decline in the production and sales volume during the POI even though in absolute terms, it has increased as compared to previous years. It has been stated by the domestic

industry that they had to suspend the production of the feed grade after the POI. The trend of the capacity utilization follows the same trend as of

Finished Goods Closing stock as at		
	Vitamin E Acetate Kgs indexed	Vitamin E 50% Animal Kgs indexed
Jan-01	100.00	100.00
Mar-01	113.69	101.69
Jun-01	52.41	137.29
Sep-01	108.99	347.46
Dec-01	105.91	40.68
Mar-02	134.55	199.58
Raw Material Closing stock as on		
	Isophytol Kgs indexed	TMP Kgs indexed
Jan-01	100.00	100.00
Mar-01	134.58	80.00
Jun-01	159.45	80.00
Sep-01	109.85	176.67
Dec-01	175.75	184.68

production as there is no change in the capacity created. It is noted that Acetate grade is produced for selling in the market and also for producing the feed grade and other material. It is noted further that the captive consumption of the domestic industry has not significantly changed. However, it is seen that the merchant sales volume of the petitioner has declined significantly and sales in Q1 2002 have declined as compared to sales volume in the same quarter of 2001. The Authority notes that the domestic industry has suffered volume injury during the POI with regards to subject goods.

#### (vi) Opening and Closing Stocks.

There is a marked rise in the closing stocks during POI indicating that there is a significant change in the inventory position of the domestic industry during the period of investigation. The authority notes that in spite of the significant captive consumption, the petitioner is affected with increasing stock of the subject goods. The Authority notes that the domestic industry has suffered injury on this parameter.

#### (vii) Productivity and Employment

The Productivity of the domestic industry, measured in terms of the production of the subject goods per employee follows the same trend

as that of production. However the productivity started deteriorating after Q2 2001. The Employment level with the domestic industry declined, which may have resulted in the increase of the productivity. However the productivity again declined during the POI after improving from 98 onwards. The Authority does not conclude injury to the domestic industry on this parameter.

#### (viii) Factors affecting the Domestic Prices

##### Price undercutting, price underselling and Price suppression

As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry the principle (iv) of Annexure-II of the Anti-Dumping Rules states:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic Industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree. The Authority has compared the landed value of imports of subject goods (both acetate grade and feed grade )from subject countries during the POI with the net sales realization and has found that there has been a significant price under-cutting by the dumped imports. The landed value of imports has been found to be significantly lower than the domestic industry's net sales realization.

The Authority has also examined the claim of the petitioner that the domestic industry is suffering from the sale of Vitamin E Acetate as well as Feed Grade. The Authority notes that price underselling is an important indicator to make an assessment of the injury. The Authority has worked out the Non-injurious price for the product under consideration and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling causing injury to the domestic industry. Additionally, the imports were having

significant suppressing/ depressing effect on the prices in the domestic market, as the domestic industry had not been able to raise its selling price in view of the dumped imports especially in the feed grade. Thus examination of the available evidence shows that the domestic industry as a whole has suffered injury on its sales of subject goods during POI. The Authority has determined the extent of price undercutting during the POI and concludes that the domestic industry has suffered significant price undercutting and price underselling during the POI because of import from the subject country.

#### Price Undercutting in Acetate Grade (in Rs)

	1999	2000	Q1 2001	Q2	Q3	Q4	Q1 2002	POI Ann
CIF	****	****	****	****	****	****	****	****
Lan ded V	****	****	****	****	****	****	****	****
Sell Pric e	****	****	****	****	****	****	****	****
Pric e UC	****	****	****	****	****	****	****	****

Rs		Price Grade	Undercutting	Feed			
CIF	****	****	****	****	****	****	****
Lan ded V	****	****	****	****	****	****	****
Sell Pr	****	****	****	****	****	****	****
Pr UC	****	****	****	****	****	****	****

#### (ix) Selling Price & Profitability:

The Authority does not find any decline in the sales realization of the Acetate Grade. Their profitability with regard to acetate grade

has improved during the POI as compared to previous year though there has been a significant loss of volumes during the different quarters of the POI and also as compared to previous years. As regards Feed Grade, the Authority observes that the petitioner has reduced its prices significantly during the POI as per the Quarter wise information and also as compared to previous years. Their profitability with regard to feed grade has also suffered and the petitioner, which was earlier making profit, has turned into severe losses.

#### (x) Magnitude of the margin of dumping

The Dumping margin from China PR is not only more than de minimus but also very significant.

#### (xi) Return on Investments

The return on investments has improved from 98 onwards. However after improving from 98 to 2000, it has started deteriorating during the later quarters of the POI.

#### (xii) Actual and potential negative effects on cash flow

Cash profits from the production and sales of the subject goods show improvement from 98 to the POI. However analysis of the data for the quarter wise during the POI indicate that cash profit show a declining trend during the later POI. Therefore, cash flow shows deterioration after improving from 98 onwards.

#### (xiii) Wages

Total wages have shown marginal increase from 98 to the POI. However the Authority notes that it may be seen in the light of the reduction in the number of the employees and also the fact that it is a multi product company.

#### (xiv) Growth

While the demand of the subject goods have increased significantly from 98 to the POI, the growth of the domestic industry has been less than increase in the demand of the subject goods.

#### (xv) Ability to raise fresh investments

The domestic industry is a multi product company and this may not be relevant parameter with regard to the facts and circumstances of this case.

In view of significant change in the performance of the domestic industry during the investigation period and in view of past

losses being suffered by the domestic industry (due to both high raw material costs and dumping), the Authority considered it appropriate to examine performance of the domestic industry in detail within the investigation period. This was done by comparing the performance of 2000 with quarterly performance for the five quarters of the investigation period. It was found in respect of more relevant injury parameters that while the performance improved for the first 2/3 quarters, it steeply deteriorated in the next 3/2 quarters. This trend in performance was found in respect of production, capacity utilization, sales volume, profits, productivity, return on investments, cash flow, inventories, growth. For example, for both the grades, sales volumes, which showed continuous improvement till Q2, 2001, shows significant decline thereafter. At the same time, imports show significant increase from Q3, 2001.

#### Conclusions on Injury

41. From the foregoing, the following conclusions are made by the Authority regarding injury suffered by the domestic industry

1. Imports from the subject country of subject goods have increased significantly in absolute terms.
2. Imports from subject country have increased in relation to total imports of Vitamin-E in India.
3. Imports from the subject country have increased in relation to the demand of Vitamin-E in India.
4. Imports are significantly undercutting the selling prices of the domestic industry.
5. The petitioner is suffering from price underselling also as landed price of subject goods are below the Non Injurious price or fair selling price of the domestic industry.
6. The domestic industry has suffered losses on account of sales on feed grade. However they have improved their profitability in the Acetate grade though they suffered a loss on their sales volume.
7. The domestic Industry has suffered mainly volume injury in Acetate grade and Volume as well as price injury in Feed grade. On the whole, the domestic industry has suffered material injury.

#### CAUSAL LINK:

42. In determining whether injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts:-

- (i) In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports from the subject country, the Authority holds that the increase in the quantum of import from the subject country resulted in the curtailment of market share of the petitioner. In considering the effect of dumped imports of Vitamin-E (Acetate as well as feed grade), the Authority has found that based on the close resemblance of their chemical characteristics and usage these are like article to the domestically produced Vitamin-E (Acetate as well as feed grade). Import of Vitamin-E from the subject country had the effect to displace the demand of domestically produced Vitamin-E. The Authority holds that substantial increase in imports of subject goods have contributed to the increase in imports in absolute terms. This had the effect of undercutting the prices of domestic industry to sell below its fair selling price in the case of Feed grade and to reduce in sales volume in the case of Acetate grade. Thus the Authority has found that Substantial imports of subject goods from China PR at dumped prices forced the domestic industry to reduce its selling prices in Vitamin E Feed Grade to un-remunerative level, which has resulted in a situation of price undercutting in the Indian market. Also with respect to subject goods, the landed price of imports from subject country is below the selling price of the domestic industry, which is resulting in price undercutting in the Indian Market. The Authority has also examined the landed price of imports from countries other than the subject country and has found that landed price from Non subject country has been higher than the imports from China PR and their share in total imports have also decreased during the POI as compared to previous year.
- (ii) The imports from China PR suppressed the prices of the product Vitamin-E 50% dry powder (Feed Grade) in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit from the sale of subject goods in India.

The Authority, therefore, notes from the above that the imports of subject goods (Both Acetate as well as the feed grade) from the China PR have been at a price below the non-injurious price for the domestic industry. Imports from other countries have grown much less than the subject country and prices from these countries are higher than the subject country. The Authority could not find any evidence of contraction of demand, change in pattern of consumption, trade restrictive practices of and

competition between the foreign and domestic producers. It is also noted that developments in technology has not been a cause for injury to the domestic industry. These parameters collectively and cumulatively indicate that the petitioner has suffered material injury due to the dumped imports from subject country.

43. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation.

#### **INDIAN INDUSTRY'S INTEREST:**

44. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods.

The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from China PR in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

#### **CONCLUSIONS:**

45. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- (i) The subject goods have been exported to India from the subject country below its normal value.

- (ii) The Domestic Industry has suffered material injury;
- (iii) The injury has been caused by the dumped imports from Subject Country.
46. The Authority considers it necessary to impose a definitive anti dumping duty on all imports of Vitamin-E in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority is indicated in the paragraphs above. The Authority proposes to recommend the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation. The Authority, therefore, recommends imposition of definitive anti dumping duty on the goods, the description of which is specified in column (3) of the Table below, falling under sub-heading or tariff item of the First Schedule to the said Customs Tariff Act as specified in the corresponding entry in column (2), the specification of which is specified in column (4) of the said Table, originating in the countries as specified in the corresponding entry in column (5), and produced by the producers as specified in the corresponding entry in column (7), when exported from the countries as specified in the corresponding entry in column (6), by the exporters as specified in the corresponding entry in column (8), and imported into India, an anti-dumping duty at a rate which is equivalent to the difference between, the amount as specified in the corresponding entry in column (9), in the currency as specified in the corresponding entry in column (11) and per unit of measurement as specified in the corresponding entry in column (10), of the said Table, and the landed value of such imported goods in like currency per like unit of measurement.

Table

S. No.	Sub- heading or tariff item	Description of goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	2936 28 00	Vitamin E Acetate	96% Grade	People's Republic of China	Any country	Any producer	Any exporter	22.64	Kilogram	US Dollar
2.	2936 28 00	Vitamin E Acetate	93% Grade	People's Republic of China	Any country	Any producer	Any exporter	21.94	Kilogram	US Dollar
3.	2309 90	Vitamin E Feed Grade or Dry powder	50% Grade	People's Republic of China	Any country	Any producer	Any exporter	11.32	kilogram	US Dollar
4.	2936 28 00	Vitamin E Acetate	96% Grade	Any country	People's Republic of China	Any producer	Any exporter	22.64	Kilogram	US Dollar
5.	2936 28 00	Vitamin E Acetate	93% Grade	Any country	People's Republic of China	Any producer	Any exporter	21.94	Kilogram	US Dollar
6.	2309 90	Vitamin E Feed Grade or Dry powder	50% Grade	Any country	People's Republic of China	Any producer	Any exporter	11.32	Kilogram	US Dollar

In case the concentration of the imported product is reported different from the concentration mentioned in the table as mentioned above, Anti Dumping duty on pro rata basis would apply.

47. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

48. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 2<sup>nd</sup> December 2002.

49. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra.

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority